हरिभूमि

हिसार-हांसी भूमि

रोहतक, रविवार 14 जून 2026

12 बीएससी नर्सिंग में 100 सीटों के लिए 1534 आवेदन

12 पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी...

खबर संक्षेप

पेट्रोल पंप पर लूटपाट करने में तीन रिमांड पर

हिसार। आजाद नगर थाना पुलिस ने भेरियां गांव के पेट्रोल पंप पर कर्मचारियों से लूटपाट करने के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पूछताछ के लिए तीनों को तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया है। आरोपियों ने दोनों कर्मचारियों को डरा-धमकाकर 38 हजार रुपये लूट लिए तथा मौके से फरार हो गए। मामले की जांच करते हुए उप निरीक्षक धर्मवीर सिंह ने आरोपी अनिल कुमार, महम की किशनगढ़ कॉलोनी निवासी कुलदीप सिंह तथा शिव पुरानी कॉलोनी नरवाना निवासी राजीव को अदालत से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों को अदालत में पेश करके तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

जेल में अफीम सप्लाई करने वाले दो रिमांड पर

हिसार। पुलिस ने जेल में नशीला पदार्थ पहुंचाने के मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को प्रोडक्शन वारंट पर लेकर एक दिन का पुलिस रिमांड हासिल किया है। इस संबंध में जेल उप अधीक्षक दिनेश कुमार ने पुलिस को शिकायत दी थी कि आरोपी विशाल के बैग से टेप में लिपटा हुआ अफीम जैसा पदार्थ बरामद किया गया। बरामद पदार्थ को कब्जे में लेकर दोनों व्यक्तियों से पूछताछ की गई। बरामद पदार्थ का वजन करने पर टेप सहित कुल 47.05 ग्राम अफीम पाई गई। पातन निवासी महावीर व खाराखेड़ी निवासी वीरेंद्र को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों को अदालत में पेश करके एक दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

बिजली संकट से परेशान किसानों ने बरवाला रोड़ पर लगाया जाम

ढाणियों में पिछले तीन-चार दिनों से बिजली सप्लाई बंद, ग्रामीणों में रोष

- *जाम की सूचना पर बिजली निगम के मौके पर पहुंचे*
- *करीब आधे घंटे तक जाम के चलते यातायात प्रभावित रहा*

सड़क जाम की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे बिजली निगम के जेई सतबीर ने किसानों को आश्वासन दिया कि शनिवार शाम 7 बजे तक गांव बिजली आपूर्ति बहाल कर दी जाएगी। आश्वासन के बाद किसान जाम समाप्त करने पर सहमत हुए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार/हांसी

बरवाला रोड स्थित गांव घिराए में बिजली आपूर्ति ठप होने से नाराज किसानों ने शनिवार को रोड जाम कर दिया। किसान संघर्ष समिति हरियाणा के हांसी हलका अध्यक्ष सतीश बूरा के नेतृत्व में किसानों ने प्रदर्शन किया। किसानों का कहना था कि उनकी ढाणियों में पिछले तीन-चार दिनों से बिजली सप्लाई बंद है। जिसके चलते ग्रामीणों को काफी परेशानी हो रही हैं। कई बार शिकायत करने के बावजूद बिजली निगम ने कोई कार्रवाई नहीं की, जिसके बाद उन्हें सड़क जाम करने पर मजबूर होना पड़ा। रोड जाम होने से दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। रोड जाम की सूचना मिलने पर बिजली निगम के अधिकारी मौके पर पहुंचे और किसानों से बातचीत शुरू की। लेकिन सड़क पर बैठे किसानों ने स्पष्ट किया कि जब तक बिजली बहाल करने का ठोस आश्वासन नहीं मिलेगा, तब तक उनका आंदोलन जारी रहेगा।

हांसी। बरवाला रोड़ पर कुर्सी डालकर जाम लगाते किसान। फोटो :हरिभूमि

जारी रहेगी मांग

किसानों ने दी आंदोलन की चेतावनी

करीब आधे घंटे तक चले जाम के बाद सड़क पर यातायात फिर से सामान्य हो गया। लेकिन किसानों ने चेतावनी दी है कि यदि तय समय तक बिजली आपूर्ति शुरू नहीं हुई तो वे इससे भी बड़ा आंदोलन करने से गुरेज नहीं करेंगे, जिसकी जिम्मेदारी बिजली निगम और प्रशासन की होगी।

तेज अंधड़ के कारण हजारों खंभे और कई ट्रांसफार्मर गिरने से आई दिक्कत

बता दें कि पिछले 3-4 चार दिनों से मौसम में आए बदलाव के चलते तेज अंधड़ के कारण हिसार व हांसी जिले में हजारों की संख्या में बिजली के पोल व ट्रांसफार्मर गिर गए हैं। इसके अलावा हजारों पेड़ भी बिजली के लाइन पर उखड़कर गिर गए। इसके चलते दर्जनों गांवों में बिजली संकट गहराया हुआ है। कुछ गांवों व उनके साथ लगती ढाणियों में हालात ज्यादा खराब होने के कारण बिजली निगम को बिजली आपूर्ति बहाल करने में अधिक समय लग रहा है। शुक्रवार को हिसार-बालसमंद रोड पर पड़ने वाले गांव के लोगों ने बिजली समस्या से परेशान होकर जाम लगाया था। वहां भी तेज अंधड़ से सैकड़ों बिजली के पोल, ट्रांसफार्मर और पेड़ गिर गए थे।

पिछले 29 दिन से पानी के लिए धरने पर बैठे चनौत के ग्रामीण

- पेयजल समस्या को लेकर धरने पर बैठे ग्रामीणों के समर्थन में पहुंचे निशित कटारिया
- ग्रामीणों पर दर्ज किए गए मुकदमें वापस लेने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

पेयजल की मांग को लेकर चानौत गांव में चल रहा धरना 29वें दिन भी जारी रहा है। धरने के 29वें दिन हरियाणा युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष निशित कटारिया ने शनिवार को धरने पर पहुंच पेयजल समस्या को लेकर चल रहे धरने पर बैठे ग्रामीणों के आंदोलन का समर्थन किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की मांगों को जायज बताते हुए सरकार से जल्द समाधान करने की मांग की। धरनास्थल पर मौजूद ग्रामीणों को संबोधित करते हुए निशित कटारिया ने कहा कि पेयजल उपलब्ध कराना सबसे बड़ा इंसानी धर्म है, जो राजधर्म से भी ऊपर है। उन्होंने कहा कि पानी और हवा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं पर हर नागरिक का समान अधिकार है तथा सरकार का पहला दायित्व लोगों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना होना चाहिए। यदि लोगों को पीने का स्वच्छ पानी भी न मिले तो यह प्रशासनिक व्यवस्था की गंभीर विफलता है। कटारिया ने आंदोलन में शामिल ग्रामीणों पर दर्ज किए गए मुकदमों को तत्काल वापस लेने की मांग की। युवा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने चेतावनी दी कि यदि चानौत गांव की पेयजल समस्या का जल्द समाधान नहीं किया गया तो कांग्रेस पार्टी के विधायक और सांसद इस मुद्दे को विधानसभा और लोकसभा में मजबूती से उठाएंगे। इस अवसर पर विकास ढांडा, रोहित दलाल, भारत सोनी, प्रमोद, अजय बेरवाल, ईश्वर, राहुल, मनीष, जितेन्द्र, प्रवीण, अजय, भागी राणा, प्रदीप, संदीप, डॉ. अमित, सुखविंद्र, अक्षय आदि मौजूद रहे।

हांसी। चानौत गांव में धरने पर बैठे ग्रामीणों को संबोधित करते हरियाणा युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष निशित कटारिया।

रिवाल्वर छीनने की वारदात का खुलासा, आरोपी गिरफ्तार

हिसार। पीएलए चौकी पुलिस ने प्रभारी सहायक उप निरीक्षक अनूप सिंह के नेतृत्व में रिवाल्वर छीनने की सनसनीखेज वारदात का सफल खुलासा करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के पास से छीना गया असला बरामद कर उसे अदालत में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। चौकी प्रभारी चौकी अनूप सिंह ने बताया कि गत 7 जून को सूचना मिली कि कैमरी रोड स्थित विनायक नगर निवासी एक व्यक्ति से कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने उसका बैग छीन लिया गया। बैठक में उसका लाइसेंसी 32 बोर रिवाल्वर एवं 21 जिंदा कारतूस थे। सूचना मिलते ही पीएलए चौकी पुलिस ने तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू की। जांच के दौरान घटनास्थल एवं आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच करते हुए केस दर्ज किया गया।

विदेश भेजने के नाम पर लाखों की ठगी करने वाला पुलिस रिमांड पर

हांसी। किला बाजार चौकी पुलिस ने विदेश भेजने के नाम पर लाखों रुपये की धोखाधड़ी करने के एक मामले में आरोपी को कुरुक्षेत्र जेल से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी को शनिवार को अदालत में पेश कर आरोपी को गहन पूछताछ और मामले से जुड़े अन्य तथ्यों का पता लगाने के लिए 3 दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। पुलिस का कहना है कि रिमांड के दौरान यह पता लगाया जाएगा कि आरोपी ने और कितने लोगों से इसी तरह ठगी की है। साथ ही ठगी की रकम बरामद करने का प्रयास किया जाएगा। एएसआई मुनीश कुमार ने बताया कि हांसी निवासी एक महिला ने थाना शहर हांसी में शिकायत दी थी कि आरोपी बरवाला निवासी व हाल कैलाश नगर कालोनी निवासी सुमित उर्फ रंगा ने उसके बेटे को विदेश भेजने का झांसा देकर उनके साथ 3.10 लाख रुपये की धोखाधड़ी की है। आरोपी ने विदेश भेजने का भरोसा दिलाकर पीड़िता से विभिन्न किश्तों में करीब 3 लाख 10 हजार रुपये ले लिए। लेकिन रुपये लेने के बाद उसने न तो बेटे को विदेश भेजा गया और न ही रुपये वापस किए गए। इसके बाद पीड़िता ने थाने में शिकायत दर्ज करवाई थी। पुलिस ने धोखाधड़ी की संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू की। जांच अधिकारी एएसआई मुनीश कुमार ने बताया कि जांच के दौरान पता चला कि आरोपी सुमित उर्फ रंगा कुरुक्षेत्र जेल में बंद है। पुलिस ने उसे प्रोडक्शन वारंट पर लेकर हांसी लाकर पूछताछ की। पूछताछ में आरोपी ने रुपये लेने की बात कबूली है।

महंगाई व टैक्स के दौर में

एफडी क्या सचमुच बढ़ा रही है बचत

तैयारी
बिजनेस डेस्क

फिक्स्ड डिपॉजिट आज भी पूंजी की सुरक्षा और स्थिर आय के लिए एक मजबूत विकल्प है, लेकिन केवल एफडी के भरोसे लंबी अवधि में बड़ी संपत्ति बनाना आसान नहीं है। महंगाई और टैक्स मिलकर इसके वास्तविक रिटर्न को काफी कम कर सकते हैं। इसलिए निवेशकों को अपनी जरूरत, लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुसार एफडी के साथ अन्य निवेश विकल्पों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। आखिरकार निवेश की असली सफलता बैंक बैलेंस बढ़ने में नहीं, बल्कि समय के साथ आपकी क्रय शक्ति बढ़ने में छिपी होती है।

खास बातें

1. 5 प्रतिशत महंगाई के बीच एफडी कैसे बन रहा है सीमित कमाई का साधन
2. विशेषज्ञों ने दी निवेश की रणनीति बदलने की सलाह
3. सुरक्षित निवेश तो है, लेकिन लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण के लिए अकेली एफडी काफी नहीं

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) को लंबे समय से सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का प्रतीक माना जाता रहा है। निश्चित ब्याज, पूंजी की सुरक्षा और आसान प्रक्रिया के कारण लाखों निवेशक अपनी बचत एफडी में लगाते हैं। लेकिन बदलते आर्थिक माहौल में केवल ब्याज दर को देखकर निवेश का आकलन करना पर्याप्त नहीं रह गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी निवेश की वास्तविक सफलता इस बात से तय होती है कि वह महंगाई और करों का असर झेलने के बाद निवेशक की क्रय शक्ति को कितना बढ़ा पाता है। यदि एफडी पर मिलने वाला रिटर्न महंगाई दर के बराबर या उससे कम है, तो खाते में रकम बढ़ने के बावजूद वास्तविक लाभ सीमित रह जाता है। खासकर उच्च आयकर स्लैब वाले निवेशकों के लिए टैक्स कटने के बाद एफडी का रिटर्न और कम हो जाता है। ऐसे में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या एफडी केवल धन सुरक्षित रखने का साधन है या फिर वास्तव में संपत्ति निर्माण का भी प्रभावी माध्यम है।

पूंजी सुरक्षा के लिए बेहतर, लेकिन वेल्थ क्रिएशन के लिए जरूरी है विविध निवेश रणनीति

महंगाई क्यों कम कर देती है

- मान लीजिए किसी निवेशक को एफडी पर 6 प्रतिशत ब्याज मिलता है और उसी अवधि में महंगाई दर 5 प्रतिशत रहती है। ऐसे में निवेशक का वास्तविक लाभ केवल 1 प्रतिशत के आसपास रह जाता है।
- वित्तीय सलाहकार इसी कारण ₹रियल रिटर्न₹ पर जोर देते हैं। रियल रिटर्न का अर्थ है निवेश से मिलने वाला वास्तविक लाभ, जो महंगाई घटाने के बाद बचता है।
- रियल रिटर्न = निवेश पर रिटर्न – महंगाई दर
- यदि एफडी का ब्याज 4.9 प्रतिशत और महंगाई 5 प्रतिशत है, तो निवेशक की क्रय शक्ति बढ़ने के बजाय घट भी सकती है।

एसबीआई की एफडी दरें क्या बताती हैं?

- 5 प्रतिशत महंगाई को आधार मानें तो छह महीने तक की छोटी अवधि वाली कई एफडी योजनाएं महंगाई को मात देने में संघर्ष करती दिखाई देती हैं। इन पर मिलने वाला ब्याज 3.05 प्रतिशत से 4.9 प्रतिशत के बीच है।
- हालांकि 1 से 3 वर्ष की अवधि वाली एफडी अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। इस अवधि में एसबीआई करीब 6.25 से 6.4 प्रतिशत तक ब्याज दे रहा है, जिससे वास्तविक रिटर्न लगभग 1.25 से 1.4 प्रतिशत तक पहुंचता है। दिलचस्प बात यह है कि 5 से 10 वर्ष तक की लंबी अवधि की एफडी में भी महंगाई के बाद वास्तविक लाभ बहुत अधिक नहीं बढ़ता। यानी केवल लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से बड़ा लाभ मिलने की गारंटी नहीं है।

टैक्स के बाद और घट जाता है रिटर्न

महंगाई के अलावा टैक्स भी एफडी निवेशकों की कमाई को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए 6.4 प्रतिशत ब्याज वाली एफडी पर।

- शून्य टैक्स स्लैब में रिटर्न: 6.4%
- 20% टैक्स स्लैब में रिटर्न: 5.12%
- 30% टैक्स स्लैब में रिटर्न: 4.48%
- यानी 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले निवेशक के लिए 6.4 प्रतिशत का ब्याज प्रभावी रूप से 4.48 प्रतिशत रह जाता है, जो 5 प्रतिशत महंगाई से भी कम है। ऐसे में वास्तविक रिटर्न नकारात्मक हो सकता है।

लिक्विड फंड बन सकते हैं विकल्प

कम अवधि के निवेश के लिए लिक्विड फंड भी निवेशकों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, एक प्रमुख लिक्विड फंड ने पिछले एक वर्ष में 6.29 प्रतिशत रिटर्न दिया, जो अधिकांश एफडी योजनाओं के बराबर या उनसे बेहतर रहा। हालांकि एफडी की तरह लिक्विड फंड में रिटर्न की गारंटी नहीं होती। ये बाजार से जुड़े होते हैं और समय के साथ इनमें उतार-चढ़ाव संभव है।

फिर भी एफडी क्यों है पसंदीदा?

एफडी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसकी सुरक्षा और निश्चितता है। निवेशक को पहले से पता होता है कि उसे कब और कितना पैसा मिलेगा। एफडी विशेष रूप से इन लोगों के लिए उपयुक्त मानी जाती है:

- सेवानिवृत्त व्यक्ति
- आपातकालीन फंड रखने वाले निवेशक
- 1 से 3 वर्ष के लक्ष्यों के लिए बचत करने वाले लोग
- कम जोखिम पसंद करने वाले निवेशक

कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

- बेहतर महंगाई-समायोजित रिटर्न की तलाश करने वाले निवेशक अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार निम्न विकल्पों पर विचार कर सकते हैं।
- लिक्विड फंड
- मनी मार्केट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड
- आरबीआई फ्लोटिंग रेट सेविंग्स बॉन्ड
- लंबी अवधि के लिए इक्विटी म्यूचुअल फंड

हर महिला को जरूर अपनानी चाहिए ये 5 वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स

बिजनेस डेस्क

आज की महिलाएं सिर्फ परिवार और करियर की जिम्मेदारियां ही नहीं निभा रहीं, बल्कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। बदलते दौर में वित्तीय सुरक्षा और संपत्ति निर्माण महिलाओं की प्राथमिकताओं में शामिल हो चुका है। हालांकि, कई महिलाएं अभी भी निवेश, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पातीं, जिससे भविष्य में आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि सही वित्तीय योजना और अनुशासित निवेश के जरिए महिलाएं न केवल अपने वर्तमान को सुरक्षित बना सकती हैं, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए मजबूत आर्थिक आधार भी तैयार कर सकती हैं। नियमित निवेश, आपातकालीन फंड, पर्याप्त बीमा और वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी जैसे कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं। आइए जानते हैं ऐसी पांच महत्वपूर्ण वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स, जिन्हें अपनाकर महिलाएं अपने भविष्य को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बना सकती हैं।

निवेश को करें ऑटोमेटिक

नियमित निवेश की आदत बनाने का सबसे आसान तरीका है निवेश को ऑटोमेट करना। इसके लिए सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) या फिर आरडी में निवेश कर सकते हैं और हर महीने नियमित निवेश कर सकते हैं। ऑटोमैटिक निवेश की सुविधा से करियर में बदलाव या आय में उतार-चढ़ाव के दौरान भी निवेश जारी रहता है। इससे समय के साथ कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है और बिना ज्यादा निगरानी के अच्छी संपत्ति बनाई जा सकती है।

रिटायरमेंट के लिए अलग फंड बनाएं

रिटायरमेंट प्लानिंग को टालना भविष्य में आर्थिक परेशानी का कारण बन सकता है। ऐसे में करियर की शुरुआत से ही आय का एक हिस्सा रिटायरमेंट फंड के लिए अलग रखना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी खर्च और अन्य दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए भी अलग निवेश योजना बनाना फायदेमंद रहता है। समय-समय पर इन निवेशों की समीक्षा करना भी जरूरी है।

अपने फैसले खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

वित्तीय फैसलों की जिम्मेदारी खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

मजबूत इमरजेंसी फंड तैयार करें

जीवन में कब कौन सी चुनौती सामने आ जाए, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। नौकरी छूटना, स्वास्थ्य संबंधी समस्या या कोई अन्य अप्रत्याशित खर्च आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा कवरेज ही काम आता है।

ईपीएफ का छिपा फायदा

8.25% ब्याज, लेकिन असली रिटर्न 11.8%

विशेषज्ञों का मानना है कि ईपीएफ केवल बचत का माध्यम नहीं, बल्कि रिटायरमेंट योजना की रीढ़ है। नियमित योगदान, चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ, कर छूट और सरकारी निगरानी इसे एक भरोसेमंद निवेश बनाती है। यदि कर्मचारी नौकरी के शुरुआती वर्षों से ही ईपीएफ को गंभीरता से लें और बीच में निकासी से बचें, तो रिटायरमेंट तक एक बड़ा कोष तैयार किया जा सकता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

भारत में नौकरीपेशा लोगों के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) लंबे समय से रिटायरमेंट बचत का एक भरोसेमंद माध्यम रहा है। हर महीने वेतन से कटने वाली राशि और उस पर मिलने वाला ब्याज कर्मचारियों को भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि कई लोग ईपीएफ को केवल एक अनिवार्य बचत योजना मानते हैं और इसकी तुलना म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार या अन्य निवेश विकल्पों से करते हुए इसे कम रिटर्न वाला निवेश समझ बैठते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ईपीएफ की वास्तविक ताकत केवल इसकी घोषित ब्याज दर में नहीं, बल्कि इसके साथ मिलने वाले कर लाभ और पूंजी सुरक्षा में छिपी है। वर्तमान में ईपीएफ पर 8.25 प्रतिशत की दर से ब्याज मिल रहा है। पहली नजर में यह रिटर्न सामान्य लग सकता है, लेकिन यदि कर लाभों को भी जोड़कर देखा जाए तो पुराने टैक्स रिजीम में 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले कर्मचारियों के लिए इसका प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार ईपीएफ को नौकरीपेशा लोगों के लिए सबसे मजबूत और सुरक्षित रिटायरमेंट निवेश विकल्पों में गिनते हैं।

कैसे बढ़ जाता है ईपीएफ का वास्तविक रिटर्न?

अधिकांश निवेशक किसी भी योजना का मूल्यांकन केवल उस पर मिलने वाले ब्याज या रिटर्न के आधार पर करते हैं। लेकिन ईपीएफ के मामले में यह तरीका पूरी तस्वीर नहीं दिखाता। इसकी वजह यह है कि ईपीएफ निवेश पर कर छूट का अतिरिक्त लाभ मिलता है। मान लीजिए कोई कर्मचारी एक वर्ष में ईपीएफ में 1 लाख रुपये का योगदान करता है। यदि वह पुराने टैक्स रिजीम में है और 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब के अंतर्गत आता है, तो

टैक्स छूट, टैक्स-फ्री ब्याज और सुरक्षित निवेश का लाभ

आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत उसे लगभग 30 हजार रुपये तक की टैक्स बचत मिल सकती है। इसका मतलब यह हुआ कि कर्मचारी की जेब से वास्तविक रूप से केवल 70 हजार रुपये का खर्च हुआ, लेकिन ब्याज पूरे 1 लाख रुपये पर मिलेगा। 8.25 प्रतिशत की ब्याज दर के हिसाब से एक वर्ष में 8,250 रुपये का ब्याज प्राप्त होगा। यदि इस ब्याज को वास्तविक निवेश यानी 70 हजार रुपये के अनुपात में देखा जाए तो प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत के बराबर बैठता है। यही वह गणित है जिसे कई कर्मचारी नजरअंदाज कर देते हैं और केवल घोषित ब्याज दर देखकर ईपीएफ के वास्तविक लाभ का आकलन नहीं कर पाते।

ईपीएफ की बड़ी ताकत है ईपीएफ टैक्स सुविधा

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार **EPF** की सबसे बड़ी विशेषता इसका ईईई टैक्स ढांचा है। भारत में बहुत कम निवेश विकल्प ऐसे हैं जो यह तीनहरा लाभ प्रदान करते हैं। पहला लाभ निवेश के समय मिलता है। कर्मचारी द्वारा ईपीएफ में जमा की गई राशि पर धारा 80सी के तहत कर छूट का दावा किया जा सकता है। दूसरा लाभ निवेश अवधि के दौरान मिलता है। ईपीएफ खाते में जमा राशि पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह कर मुक्त होता है। तीसरा लाभ निकासी के समय मिलता है। यदि कर्मचारी ने पांच वर्ष या उससे अधिक समय तक लगातार सेवा की है, तो ईपीएफ से निकाली गई राशि भी कर मुक्त रहती है। यानी निवेश से लेकर निकासी तक तीनों चरणों में कर राहत मिलती है। यही वजह है कि ईपीएफ को कर-कुशल निवेश विकल्प माना जाता है।

नए टैक्स रिजीम में भी बना हुआ है आकर्षण

सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम में धारा 80सी के तहत मिलने वाली अधिकांश कर छूट समाप्त कर दी गई है। ऐसे में कुछ लोगों को लगता है कि ईपीएफ का महत्व कम हो गया है। हालांकि ऐसा पूरी तरह सही नहीं है। भले ही नए टैक्स रिजीम में ईपीएफ योगदान पर कर छूट न मिले, लेकिन खाते में मिलने वाला ब्याज अभी भी कर मुक्त रहता है और निर्धारित शर्तों के तहत निकासी पर भी टैक्स नहीं लगता। इसलिए यह योजना आज भी रिटायरमेंट बचत के लिए एक आकर्षक विकल्प बनी हुई है। हालांकि वर्तमान नियमों के अनुसार कर्मचारी के 2.5 लाख रुपये से अधिक वार्षिक योगदान पर मिलने वाले अतिरिक्त ब्याज के एक हिस्से पर कर लगाया जा सकता है। यह प्रावधान मुख्य रूप से उच्च आय वाले कर्मचारियों पर लागू होता है।

सही होम लोन के चुनाव से मिलेगा बड़ा फायदा

मोरेटोरियम, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन व बैलून पेमेंट से अति. लाभ | होम लोन का चयन करने से पहले विकल्पों को अच्छी तरह समझें

बिजनेस डेस्क

आज के समय में अपना घर खरीदना अधिकांश लोगों का सपना होता है, लेकिन लगातार बढ़ती प्रॉपर्टी कीमतों के कारण यह सपना पूरा करना आसान नहीं रह गया है। ऐसे में होम लोन लाखों लोगों के लिए घर खरीदने का सबसे बड़ा सहारा बनता है। हालांकि होम लोन लेते समय अधिकांश लोग केवल ब्याज दर और ईएमआई पर ध्यान देते हैं, जबकि बैंक और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार कई तरह के लोन विकल्प भी उपलब्ध कराती हैं। इन विकल्पों में मोरेटोरियम लोन, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम और बैलून पेमेंट लोन प्रमुख हैं। प्रत्येक योजना की अपनी विशेषताएं, फायदे और कुछ सीमाएं हैं। इसलिए किसी भी होम लोन का चयन करने से पहले इन विकल्पों को अच्छी तरह समझना जरूरी है।

मोरेटोरियम लोन देता है राहत

मोरेटोरियम लोन उन लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है जो कुछ समय के लिए आर्थिक दबाव का सामना कर रहे हों या भविष्य में उनकी आय बढ़ने की संभावना हो। इस योजना में उधारकर्ता को एक निश्चित अवधि तक नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। हालांकि यह सुविधा पूरी तरह मुफ्त नहीं होती। मोरेटोरियम अवधि के दौरान भी लोन पर ब्याज लगातार जुड़ता रहता है। बाद में यह ब्याज मूल बकाया राशि में जोड़ दिया जाता है।

नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना

वर्तमान समय में बड़ी संख्या में लोग निर्माणाधीन परियोजनाओं में घर खरीदते हैं। ऐसे खरीदारों के लिए नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम आकर्षक विकल्प हो सकती है। इस योजना में घर का कब्जा मिलने तक खरीदार को नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। कई मामलों में बिल्डर इस अवधि के दौरान ब्याज या ईएमआई का खर्च वहन करता है। इससे खरीदार पर तत्काल वित्तीय बोझ कम हो जाता है। यह योजना विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद मानी जाती है जो वर्तमान में किराए के मकान में रह रहे हैं और साथ ही नया घर भी खरीद रहे हैं। इससे उन्हें एक साथ किराया और ईएमआई दोनों का बोझ नहीं उठाना पड़ता। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि इस सुविधा की लागत अक्सर किसी न किसी रूप में प्रॉपर्टी की कीमत में शामिल हो सकती है। इसलिए ग्राहकों को योजना के सभी नियम और शर्तें ध्यान से पढ़नी चाहिए।

बैलून पेमेंट लोन बेहतर

बैलून पेमेंट लोन पारंपरिक होम लोन से थोड़ा अलग होता है। इसमें शुरुआती वर्षों के दौरान ईएमआई अपेक्षाकृत कम रखी जाती है, जिससे मासिक भुगतान का दबाव कम रहता है। लेकिन लोन की अवधि के अंतिम चरण में उधारकर्ता को एक बड़ी राशि एकमुश्त चुकानी होती है। इसी बड़े अंतिम भुगतान को बैलून पेमेंट कहा जाता है। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें भविष्य में आय में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद हो। उदाहरण के लिए किसी कर्मचारी को बड़े बोनस, ईएसओपी (ईएसओपी) से लाभ या वेतन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी की संभावना हो। वहीं व्यवसायियों को भविष्य में किसी बड़े लाभ की उम्मीद हो सकती है। हालांकि यदि अनुमानित आय वृद्धि नहीं होती तो अंतिम भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए इस विकल्प को चुनते समय वित्तीय स्थिति का वास्तविक आकलन करना जरूरी है।

लोन लेते समय रखें ध्यान

होम लोन का कोई भी विशेष विकल्प चुनने से पहले केवल कम ईएमआई या शुरुआती राहत को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। यह समझना जरूरी है कि लंबे समय में कुल भुगतान कितना होगा और अतिरिक्त सुविधाओं की वास्तविक लागत क्या है। ग्राहकों को लोन की कुल अवधि, कुल ब्याज भुगतान, संभावित जोखिम और अपनी भविष्य की आय की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए। इसके अलावा सभी नियमों और शर्तों को विस्तार से पढ़ना भी जरूरी है।

जरूरत अनुसार चुनें सही विकल्प

हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और जरूरत अलग होती है। इसलिए कोई भी एक लोन योजना सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। जहां मोरेटोरियम लोन अस्थायी राहत प्रदान करता है, वहीं नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना निर्माणाधीन मकान खरीदने वालों के लिए फायदेमंद हो सकती है। दूसरी ओर बैलून पेमेंट लोन उन लोगों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है जिन्हें भविष्य में अधिक आय की उम्मीद हो। विशेषज्ञों का मानना है कि सही जानकारी और सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के साथ चुना गया होम लोन न केवल घर खरीदने का सपना पूरा करता है, बल्कि लंबे समय तक वित्तीय संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।

पति-पत्नी दोनों कमाते हैं तो सही बजट, नियमित संवाद जरूरी

डबल इनकम, डबल सुरक्षा : नौकरीपेशा दंपतियों के लिए कुछ जरूरी वित्तीय नियम

तैयारी
बिजनेस डेस्क

बेहतर आर्थिक भविष्य के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। नियमित स्वास्थ्य जांच, मेडिकल इमरजेंसी फंड और पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा परिवार को अचानक आने वाले खर्चों से बचा सकते हैं। इसके अलावा जीवन बीमा भी परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

आज के दौर में जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं, तो परिवार की आय बढ़ने के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी बढ़ जाते हैं। घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और सुरक्षित रिटायरमेंट जैसे बड़े लक्ष्य अपेक्षाकृत आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। हालांकि दोहरी आय के साथ वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। कई बार खर्च, बचत और निवेश को लेकर स्पष्ट योजना न होने से मतभेद और आर्थिक असंतुलन पैदा हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि डबल इनकम वाले दंपतियों के लिए नियमित वित्तीय चर्चा, साझा बजट, व्यक्तिगत और संयुक्त खर्चों के बीच संतुलन, पर्याप्त बीमा और अनुशासित निवेश बेहद जरूरी हैं। यदि दोनों साथी मिलकर स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य तय करें और उनके अनुसार योजना बनाएं, तो न केवल वर्तमान जरूरतें बेहतर ढंग से पूरी की जा सकती हैं, बल्कि भविष्य की आर्थिक चुनौतियों का सामना भी आसानी से किया जा सकता है। छोटी-छोटी वित्तीय आदतें लंबे समय में बड़ी सफलता की नींव बनती हैं।

'मेरा, तुम्हारा और हमारा' फॉर्मूला अपनाएं

शादी के बाद भी आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व बना रहता है। इसके लिए आय को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। एक हिस्सा साझा खर्चों और पारिवारिक लक्ष्यों के लिए, जबकि बाकी दोनों पार्टनर के व्यक्तिगत खर्चों के लिए रखा जा सकता है। इससे जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत जरूरतों के बीच संतुलन बना रहता है।

पैसों को लेकर खुलकर करें बातचीत

अक्सर दंपति आय और खर्चों को लेकर नियमित चर्चा नहीं करते, जिससे कई बार गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर महीने एक तय समय पर बैठकर आय, खर्च, बचत और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करनी चाहिए। इससे वित्तीय फैसले पारदर्शी बनते हैं और आपसी विश्वास भी मजबूत होता है।

सही वित्तीय योजना से रख सकते हैं सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की मजबूत नींव

मिलकर बनाएं संतुलित बजट

दोनों की कुल आय को ध्यान में रखते हुए मासिक बजट तैयार करना जरूरी है। इसमें घर का किराया, राशन, बच्चों की जरूरतें, यात्रा और अन्य नियमित खर्चों के साथ भविष्य के लक्ष्यों के लिए भी राशि निर्धारित करनी चाहिए। एक व्यवस्थित बजट अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने में मदद करता है।

बचत और निवेश को बनाएं आदत

दोहरी आय का सबसे बड़ा लाभ तभी मिलता है जब उसका एक हिस्सा नियमित रूप से बचत और निवेश में लगाया जाए। विशेषज्ञ कम से कम छह महीने के खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह देते हैं। इसके बाद जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार म्यूचुअल फंड, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में निवेश किया जा सकता है।

छोटी आदतें, बड़ा फायदा

वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि आर्थिक सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की छोटी और अनुशासित आदतों से हासिल होती है। नियमित संवाद, सही बजट, पर्याप्त सुरक्षा और व्यवस्थित निवेश के जरिए डबल इनकम वाले दंपति अपने सपनों को तेजी से पूरा कर सकते हैं और भविष्य को अधिक सुरक्षित बना सकते हैं।

खबर संक्षेप

एचएयू व जॉन डियर इंडिया के बीच हुआ समझौता

हिसार। हरियाणा कृषि विवि और जॉन डियर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (जेडीआईपीएल) पुणे के बीच कृषि यंत्रीकरण एवं उन्नत कृषि तकनीकों के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ है। इसमें जॉन डियर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की तरफ से सुपरवाइजर आलोक रंजन तथा विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने बताया कि इस समझौते से कृषि अनुसंधान, यंत्रीकरण तथा प्रायोगिक खेती को नई दिशा मिलेगी।

जाट कॉलेज में दो दिवसीय विज्ञान कार्यशाला

हिसार। हरियाणा ज्ञान-विज्ञान समिति व हरियाणा विज्ञान मंच के संयुक्त तत्वाधान में जाट कॉलेज में आयोजित दो दिवसीय क्षेत्रीय विज्ञान कार्यशाला का उद्घाटन जाट कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार बाजिया ने किया। प्रोफेसर बाजिया ने अपने संबोधन में कहा कि समाज के विकास का सीधा संबंध समाज में वैज्ञानिक मानसिकता से है। उत्तरोत्तर स्तरोन्नत समाज बनाने के लिए वैचारिक और व्यावहारिक स्तर पर वैज्ञानिक विधियों का इस्तेमाल ही हमें साधन संपन्न होने की गारंटी देता है।

ऑल हरियाणा पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल कर्मचारी यूनियन ने जताया विरोध

मंत्री रणबीर गंगवा के आवास पर प्रदर्शन, मनमानी का लगाया आरोप

- कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने और लंबे समय से वेतन नहीं मिलने का मुद्दा उठाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। प्रदर्शनकारी कर्मचारियों को मंत्री के आवास पर जाने से रोकती पुलिस। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा कर्मचारी महासंघ से संबंधित ऑल हरियाणा पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल कर्मचारी यूनियन द्वारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत रोजगार बचाओ, विभाग बचाओ अभियान के अंतर्गत जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा के आवास पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को देखते भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था। प्रदर्शनकारी कर्मचारी जब मंत्री के आवास की तरफ बढ़ने लगे तो पुलिस ने बेरिकेट्स लगाकर उन्हें मंत्री आवास से कुछ दूरी पर ही रोक लिया। इस दौरान कर्मचारियों ने मंत्री व सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। घेराव कार्यक्रम की अध्यक्षता यूनियन के प्रांतीय प्रधान नरेंद्र धीमान तथा संचालन प्रांतीय महामंत्री अमरिक सिंह चठ्ठा ने किया।

सरकार जनस्वास्थ्य विभाग को कमजोर करने पर तुली : प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि सरकार जनहित से जुड़े जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को कमजोर करने की दिशा में काम कर रही है। वक्ताओं ने कहा कि ग्रामीण जलघरों को पंचायतों के अधीन करने का निर्णय विभाग के अस्तित्व पर खतरा पैदा करेगा तथा इससे कर्मचारियों के रोजगार और सेवा सुरक्षा पर भी असर पड़ेगा।

कर्मचारी नेताओं ने कहा कि संगठन के साथ संवाद न करना सरकार की मनमानीपूर्ण कार्यशैली को दर्शाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि न्यायालय के आदेशों के बावजूद कच्चे कर्मचारियों को नियमित नहीं किया जा रहा है तथा सेवा सुरक्षा अधिनियम भी कर्मचारियों की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा है। साथ ही पुरानी पेंशन योजना बंद किए जाने और जॉब वर्क कर्मचारियों को लंबे समय से वेतन न मिलने के मुद्दे भी प्रमुखता से उठाए गए।

प्रदर्शन को इन्होंने किया संबोधित

प्रदर्शन को हरियाणा कर्मचारी महासंघ के प्रांतीय मुख्य संगठनकर्ता कुलदीप शर्मा, प्रांतीय चेयरमैन रणबीर दलाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष जिला सिंह भड़ाना, मुख्य संगठनकर्ता रविंद्र फौजी, मुख्य कोषाध्यक्ष पवन रजाना, पूर्व वित्त सचिव ईश्वर शर्मा, उदयभान, सतवीर सुरलिया और राजेश नलवा सहित अनेक कर्मचारी नेताओं ने संबोधित किया।

यूनियन की सरकार से प्रमुख मांगें

यूनियन ने सरकार से मांग की कि ग्रामीण जलघरों को पंचायतों के अधीन करने का निर्णय वापस लिया जाए, पुरानी पेंशन योजना बहाल की जाए, सभी प्रकार के कच्चे कर्मचारियों को न्यायालय के आदेशों के अनुरूप नियमित किया जाए तथा कर्मचारियों की लंबित मांगों के समाधान के लिए संगठन नेतृत्व से वार्ता की जाए। कर्मचारी नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि मांगों पर शीघ्र सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

हिसार। गेट मीटिंग के दौरान नारेबाजी करते कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

जिले से सैकड़ों कर्मचारी होंगे शामिल

शिक्षा मंत्री के आवास पर प्रदर्शन 21 को : मौलिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

सर्व कर्मचारी संघ से संबंधित हरियाणा राज्य चतुर्थ श्रेणी सरकारी कर्मचारी यूनियन की क्षेत्र-3 भेड़ प्रजनन फार्म एवं राजकीय पशुधन फार्म ब्रांच की गेट मीटिंग प्रधान रणबीर रावत की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचालन जिला सचिव जगसीर खेदड़ ने किया। वक्ताओं ने बताया कि 21 जून को प्रदेश के शिक्षा मंत्री के पानीपत स्थित आवास पर एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन किया जाएगा, जिसमें जिले भर से बड़ी संख्या में कच्चे एवं पक्के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भाग लेंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए जिला प्रधान छबीलदास मौलिया तथा मुख्य वक्ता एवं सर्व कर्मचारी संघ ब्लॉक हिसार के प्रधान राजेश बागड़ी ने कहा कि प्रदेश सरकार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की मांगों के प्रति गंभीर नहीं है। राज्य कमेटी द्वारा बार-बार मांग पत्र भेजकर कर्मचारियों की समस्याओं और लंबित मांगों से सरकार को अवगत कराया गया, लेकिन अभी तक कोई संतोषजनक समाधान नहीं हुआ है। इससे कर्मचारियों में भारी रोष व्याप्त है। उन्होंने कहा कि सरकार लगातार स्कूलों को मर्जर के नाम पर बंद कर रही है तथा रेशनलाइजेशन आयोग के माध्यम से सार्वजनिक विभागों को सीमित करने का प्रयास किया जा रहा है।

तिरुपति धाम में भगवान वेंकटेश की सवारी शोभा यात्रा देखकर अभिभूत हुए श्रद्धालु

हिसार। अध्यात्म व संस्कृति के पोषक तिरुपति बालाजी धाम में निकाली गई भगवान वेंकटेश की सवारी शोभा यात्रा में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पूरे विधि-विधान से अभिषेक व पूजा-अर्चना की गई और मंत्रोच्चारण के साथ भगवान वेंकटेश के विग्रह को रथ पर स्थापित पालकी में विराजमान किया गया। इनके साथ ही माता लक्ष्मी व माता भूदेवी के विग्रह भी शोभायमान किए गए। सवारी शोभा यात्रा से पूर्व श्रद्धालुओं ने धाम में स्थापित तिरुपति बालाजी, माता पदमावती व माता गोदांबा के मुख्य मंदिरों में दर्शन किए और माथा टेककर मन्नत मांगी। उल्लेखनीय है कि ये सभी मंदिर दक्षिण भारत से लाए गए ग्रेनाइट पत्थर से वहीं के कारीगरों द्वारा पूरी आस्था से निर्मित किए गए हैं। इस सवारी शोभा यात्रा के दौरान श्रद्धालु जय श्रीमन्ननारायण, जय गोविंदा व जय भगवान वेंकटेश के जयघोष करते रहे। विशेष बात यह रही कि भक्तों ने अपने हाथों से रथ को खींचकर अपनी आस्था जताई और धाम की परिक्रमा की। शोभा यात्रा के उपरांत श्रद्धालुओं में गोष्ठी प्रसाद का वितरण किया गया। सवारी शोभा यात्रा के लिए पधारे श्रद्धालुओं ने धाम में स्थापित वेंकटेश भगवान, पद्मावती माता, गोदांबा माता, गरुड़, लक्ष्मी नृसिंह, रामानुज स्वामी, सुदर्शन, शठकोप स्वामी, वरवर मुनि एवं हनुमान के मंदिरों के दर्शन किए। 42 फुट ऊंचे सोने के गरुड़ स्तंभ, बलिपीठम्, तिरुपति यज्ञशाला, श्रीनिवास गोशाला, पवित्र पुष्करणी व 71 फुट ऊंचे गोपुरम के भी दर्शन करके श्रद्धालु अभिभूत हो गए।

खराब मौसम के बावजूद योग साधकों का उत्साह बरकरार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

भारत स्वाभिमान न्यास एवं पतंजलि योग समिति के तत्वावधान में ठाकुरदास भार्गव सीनियर सेकेंडरी स्कूल में चल रहे 15 दिवसीय असिस्टेंट योग टीचर ट्रेनिंग कैंप एवं बाल संस्कार-चरित्र निर्माण शिविर के सातवें दिन योग, संस्कार, स्वास्थ्य जागरूकता एवं राष्ट्र निर्माण के विविध विषयों पर सार्थक चर्चा हुई।

शिविर में आगामी 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले योग प्रोटोकॉल का विशेष प्रशिक्षण आयुष विभाग के योग सहायकों सुनील मक्कड़ एवं नवीन कुमार द्वारा करवाया गया। इससे पूर्व शनिवार के कार्यक्रम का शुभारम्भ महिला शक्ति द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

हिसार। दीप प्रज्ज्वलन के साथ शिविर का शुभारंभ करती महिला शक्ति।

दीप प्रज्वलन में शकुन्तला, मीनाक्षी मुद्गिल, सीमा, अलका, वंशिका, आशा एवं डॉ. मीनाक्षी सहित अनेक मातृशक्ति प्रतिनिधियों ने भाग लिया। योगाभ्यास पतंजलि योग समिति के प्रभारी वीरेन्द्र बड़ाला एवं भारत स्वाभिमान न्यास के प्रभारी डॉ. मुकेश कुमार द्वारा संयुक्त रूप से करवाया गया। प्रवक्ता सुरेन्द्र पानू हिन्दुस्तानी ने बताया कि दोनों योग सहायकों ने अपनी योग यात्रा पतंजलि परिवार के कार्यकर्ता के रूप में प्रारम्भ की थी और आज योग एवं आयुष सेवाओं के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

प्राकृतिक एवं विषमुक्त खेती के महत्व पर चर्चा

शिविर में प्राकृतिक एवं विषमुक्त खेती के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की गई। सभी प्रशिक्षुओं ने लिया संकल्प, 100 नए लोगों को योग से जोड़ेंगे। शिविर के दौरान जब प्रशिक्षुओं से पूछा गया कि प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद अपने-अपने क्षेत्रों में योग कक्षाएं कौन प्रारम्भ करेगा, तो सभी साधकों ने उत्साहपूर्वक हाथ उठाकर योग प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया। सभी ने एक स्वर में प्रतिज्ञा की कि वे कम से कम 100 नए लोगों को योग से जोड़कर स्वस्थ समाज निर्माण में अपनी भूमिका निभाएंगे। इस अवसर पर डॉ. संदीप, बनी सिंह जागंडा, बबीता गिल, विनीत जागंडा, विनय मल्होत्रा, संजय चौहान, देवेन्द्र जूनी सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं योग साधक उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी

जिंदल पार्क में योग साधना शिविर का शुभारंभ

हिसार। स्वस्थ एवं संतुलित जीवन का आधार योग है। इसी उद्देश्य को लेकर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में भारत विकास परिषद, विवेकानंद शाखा तथा भारतीय योग संस्थान इकाई के संयुक्त तत्वावधान में जिंदल पार्क में पांच दिवसीय योग साधना शिविर का शुभारंभ किया गया, जिसमें 250 से अधिक योग साधकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ रामबिलास गोयल द्वारा प्रस्तुत योग-भजन से हुआ। भारतीय योग संस्थान के प्रशिक्षक डॉ. एसएम बहल ने सूक्ष्म क्रियाओं का अभ्यास कराया। सरला ग्रेवाल ने ओम ध्वनि एवं गायत्री मंत्र का उच्चारण करवाया। इसके उपरांत ताड़ासन, कटिचक्रासन, सूर्य नमस्कार, वक्रासन, वज्रासन, उत्तान मंडूकासन, मकरासन, सर्पासन, सेतुबंधासन, पवनमुक्तासन, शवासन सहित विभिन्न योगासन एवं योग क्रियाओं का अभ्यास कराया गया। शिव पार्क महिला शक्ति ने योग गतिविधियों की आकर्षक प्रस्तुति दी। भारतीय योग संस्थान के प्रधान सुरेश जांगड़ा ने प्राणायाम का अभ्यास करवाया तथा नियमित योगाभ्यास के लिए प्रेरित किया।

श्री श्याम योग केन्द्र में निःशुल्क योग शिविर

बरवाला। भारतीय योग संस्थान बरवाला इकाई द्वारा श्री श्याम वाटिका, श्री श्याम मंदिर बरवाला में श्री श्याम योग केंद्र के प्रांगण में निशुल्क योग शिविर का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर भारतीय योग संस्थान बरवाला इकाई के संरक्षक दीपक मंगला, संरक्षक तिलक गिरधर, जिला प्रधान संजीव असीजा, जिला मंत्री डॉ. रामपाल, जिला संगठन मंत्री जिले सिंह व इंद्रजीत शर्मा योग शिक्षक के सहयोग से साधकों को सूक्ष्म क्रियाएं, योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास कराया गया। इस योग शिविर में लगभग 30 साधकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि योग हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। नियमित योगाभ्यास से शरीर स्वस्थ, मन शांत और बुद्धि एकाग्र होती है। उन्होंने सभी नागरिकों से प्रतिदिन योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का आह्वान किया।

जिला बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने संभाला कार्यभार

हिसार। जिला बार एसोसिएशन के वार्षिक चुनाव में विजयी हुए नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने बार रूम में आयोजित समारोह के दौरान अपना कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर चुनाव अधिकारी एडवोकेट दलीप जाखड़ ने शनिवार को सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को उनके पदों की शपथ दिलाते हुए निष्पक्षता, पारदर्शिता एवं बार के हित में कार्य करने का संकल्प दिलाया। चुनाव में एडवोकेट प्रदीप बाजिया प्रधान, एडवोकेट राहुल सिंह उप प्रधान उपाध्यक्ष, एडवोकेट समीर सिहाग सचिव, एडवोकेट साहिल मदेरणा सह-सचिव तथा एडवोकेट आशा रानी बाल्यान कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए थे। समारोह को संबोधित करते हुए चुनाव अधिकारी एडवोकेट दलीप जाखड़ ने चुनाव प्रक्रिया को सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाने में सहयोग देने के लिए चुनाव समिति, सभी प्रत्याशियों, जिला बार एसोसिएशन के सम्मानित सदस्यों तथा बार स्टाफ का आभार व्यक्त किया।

दिल्ली रोड पर प्रस्तावित महाराजा अरुट स्वागत द्वार को लेकर विवाद गहराया

हांसी। माता मंदिर में प्रेस वार्ता में मौजूद पंजाबी समाज के लोग। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

दिल्ली रोड़ पर प्रस्तावित महाराजा अरुट स्वागत द्वार को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। महाराजा अरुट द्वार को लेकर शनिवार को सर्व पंजाबी समाज ने एक प्रेस वार्ता कर द्वार के समर्थन में अपनी बात रखी और शहीद राजा राव तुलाराम चौक संघर्ष समिति द्वारा किए जा रहे विरोध को अनुचित बताया। समाज के प्रतिनिधियों ने बताया कि महाराजा अरुट समाज के प्रतिनिधि राहुल खुराना ने बताया कि महाराजा अरुट स्वागत द्वार का टेंडर जनवरी माह में ही पास हो चुका था। इसका निर्माण कार्य 15 फरवरी से शुरू होना था, लेकिन उससे पहले यादव समाज लोगों ने ही वहां शहीद राजा राव तुलाराम चौक का शिलान्यास किए जाने की मांग रखी जिस पर पंजाबी समाज ने आगे बढ़कर शहीद स्मारक का शिलान्यास करवाया लेकिन अब महाराजा अरुट द्वार को लेकर कुछ लोगों ने अनावश्यक विवाद खड़ा कर दिया।

निर्माण मजदूरों ने की महापंचायत

बरवाला। संयुक्त निर्माण मजदूर मोर्चा हरियाणा के आह्वान पर शहीद मदन लाल ढीगड़ा पार्क में निर्माण मजदूरों की महापंचायत हुई। अध्यक्षता इंटक ब्लॉक अध्यक्ष मीना खेदड़, सीटू ब्लॉक अध्यक्ष रामफल ने की और संचालन जोरा सिंह पाबड़ा व राजू ने किया। नेताओं ने कहा कि 11 माह से बंद मजदूरों की साइट खोले जाने, रद्द पंजीकरण बहाल करवाने, मनरेगा का पुराना कानून बहाल करवाने, आवास योजना, छात्रवृत्ति, बीपीएल कार्ड की बहाली की मांग को लेकर बरवाला में महापंचायत की और शवयात्रा निकालते हुए मुख्यमंत्री व श्रम मंत्री मंत्री का पुतला दहन किया गया। नेताओं ने कहा कि दलित हितैषी का ढोंग करने वाली भाजपा सरकार का चेहरा बेनकाब हो चुका है। मजदूर व दलित विरोधी भाजपा सरकार ने 11 माह से मजदूरों का पोर्टल बंद किया हुआ है। मौके पर भवन निर्माण कामगार सीटू राज्य के अध्यक्ष मनोज सोनी, महासचिव कृष्ण कुमार नैन, धर्मवीर कुलेरी, अनूप सारंगपुर, केसर गहलोत, चतर सिंह, अनिल, प्रवीन, राजू, अनिल, कश्मीर, शिवम पाबडा, संतोष, मुकेश, शमशेर, सुमन, कमलेश, भतेरी, माया व ओमी मौजूद रहे।

हिसार। सोमनाथ धाम से लौटे श्रद्धालुगण। फोटो : हरिभूमि

सोमनाथ के दर्शन कर हिसार लौटे श्रद्धालु

- सरकार व प्रशासन की व्यवस्थाओं की सराहना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत सोमनाथ की यात्रा पर गए हिसार जिले के श्रद्धालु ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों के दर्शन करने के उपरांत हिसार लौट आए हैं। हिसार पहुंचने पर श्रद्धालुओं ने हरियाणा सरकार एवं जिला प्रशासन द्वारा की गई उत्कृष्ट व्यवस्थाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के माध्यम से उन्हें निशुल्क एवं सुगम यात्रा की सुविधा प्राप्त हुई, जिसके कारण वे बिना किसी बाधा के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों के दर्शन कर सके। श्रद्धालुओं ने कहा कि यह योजना समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों के दर्शन का अवसर प्रदान कर रही है। उन्होंने इस जनहितैषी पहल के लिए मुख्यमंत्री एवं राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया। श्रद्धालुओं ने यात्रा के दौरान उपलब्ध कराई गई परिवहन, आवास, भोजन तथा अन्य व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि पूरी यात्रा अत्यंत सुव्यवस्थित एवं सुविधाजनक रही।

जागरूकता विधायक ने कार्यकर्ताओं की बैठक में एसआईआर के प्रति किया जागरूक

विधायक चंद्रप्रकाश ने गोशाला के कार्यालय का किया उद्घाटन, व्यवस्था का लिया जायजा

किसी भी व्यक्ति का नाम न कटे, कोई भी फर्जी मतदाता वोटर लिस्ट में शामिल न हो

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

विधायक चंद्रप्रकाश ने मंडी आदमपुर व बालसमंद में जनता दरबार लगाकर हलकावासियों से मुलाकात की और उनकी समस्याएं सुनी। जनता दरबार में लोगों ने गर्मी के चलते बिजली व पानी की किल्लत की समस्या सामने रखी। इसके साथ की सड़कों से संबंधित समस्या भी उन्होंने बताई।

विधायक चंद्रप्रकाश ने समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों से बात करके त्वरित निदान के निर्देश दिए। मंडी आदमपुर के जनता दरबार के उपरांत विधायक आदर्श ग्रामीण योजना के तहत मंडी आदमपुर में स्थित श्री कृष्ण गोशाला में नव निर्मित कार्यालय का उदघाटन विधायक चंद्रप्रकाश ने विधिवत रूप से किया। उन्होंने गोशाला का अवलोकन किया बालसमंद में जनता दरबार के उपरांत विधायक चंद्रप्रकाश ने कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित करके उन्हें मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के संदर्भ में जागरूक किया। उन्होंने कहा कि एसआईआर के समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि किसी भी मतदाता के अधिकारों का हनन न हो और किसी भी सही मतदाता का वोट न कटे और गलत वोट न बनने पाए। उन्होंने बताया कि इस बारे में बीएलए-2 को भी विशेष हिदायत दी गई हैं ताकि किसी भी वोटर के साथ अन्याय न हो। उन्होंने कहा कि मतदाता किसी भी लोकतंत्र का सशक्त आधार होता है, इसलिए वोटर के अधिकार को सुरक्षित करना हमारा दायित्व है।

हिसार। बालसमंद में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में जानकारी देते विधायक।

निष्पक्ष एवं त्रुटिरहित मतदाता सूची तैयार करने में राजनीतिक दलों का सहयोग आवश्यक : नैन

हिसार। हरियाणा में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)-2026 कार्यक्रम के तहत बरवाला विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचन पंजीयन अधिकारी एवं एसडीएम अश्वीर नैन की अध्यक्षता में शनिवार को सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक हुई। बैठक का उद्देश्य विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के सफल एवं पारदर्शी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना था। बैठक में डीआरओ श्याम लाल, निर्वाचन पंजीयन कार्यालय से ऊषा, भूपेंद्र, रोहताश, सोहन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। एसडीएम अश्वीर नैन ने बैठक के दौरान भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिन मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की संख्या 1200 से अधिक है, वहां मतदाताओं की

हिसार। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते बरवाला एसडीएम।

खबर संक्षेप

सरकार ने ओबीसी वर्ग की मांगों को पूरा नहीं किया : वर्मा

हिसार। कांग्रेस के ओबीसी सैल के पूर्व उपाध्यक्ष सुभाष वर्मा ने आरोप लगाया कि भाजपा ने प्रदेश में पिछड़ा वर्ग के साथ विश्वासघात किया है। सरकार ने सत्ता में आने के बाद ओबीसी वर्ग की मांगों को पूरा नहीं किया। भाजपा सरकार ने पिछड़ों की मांगों को दबाने का काम किया है। अब भाजपा पंजाब में जनता बरगलाने में जुटी है। ओबीसी वर्ग अब भाजपा के झांसे में आने वाला नहीं। उन्होंने कहा कि भाजपा ने केवल पिछड़ा वर्ग के लोगों को अपने हितों के लिए इस्तेमाल करने का काम किया है। नायब सैनी पिछड़ा वर्ग के प्रदेश के सीएम है, फिर भी पिछड़ा वर्ग के हाथ खाली के खाली रह गए।

टीबी रोगियों को वितरित की पोषण आहार किट

हिसार। वानप्रस्थ सीनियर सिटीजन क्लब ने शनिवार को निक्षय मित्र अभियान के अंतर्गत शिव कॉलोनी सामुदायिक केंद्र में झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र में रहने वाले 50 टीबी रोगियों को प्रोटीन युक्त पौष्टिक आहार किट की 47वीं मासिक किस्त वितरित की। अगस्त 2022 से प्रारंभ हुआ यह सेवा अभियान पिछले 47 महीनों से निरंतर संचालित हो रहा है। क्लब के महासचिव डॉ. जे के डांग ने बताया कि प्रत्येक आहार किट में दो डिब्बे प्रोटीन पाउडर, एक किलो गुड़, एक किलो काला चना, एक किलो बेसन, दो पैकेट न्यूट्रेला तथा दो साबुन शामिल किए जाते हैं।

54वां श्याम महोत्सव का आगाज आज

हांसी। श्री श्याम मित्र मण्डल व श्री श्याम मंदिर सभा द्वारा आयोजित 54वां अष्ठ दिवसीय रंग रंगीला श्री श्याम महोत्सव का रविवार सुबह 7 बजे अखंड ज्योत प्रज्वलन के साथ विधिवत शुभारंभ हो जाएगा। श्री श्याम मित्र मंडल एवं श्री श्याम भवन के प्रधान जगदीश राय मित्तल व मंदिर सभा सदस्य विनय जैन ने बताया कि 14 जून को श्री श्याम मंदिर प्रांगण में प्रातः सुबह 7 बजे से श्री श्याम अखण्ड ज्योति प्रज्वलित की जायेगी। 15 जून को प्रातः 9 बजे श्री श्याम नाम की मेहन्दी, 16 जून को प्रातः 7 बजे श्री श्याम मंदिर भवन से कलश यात्रा निकाली जाएगी।

ट्रैफिक नियमों की अवहेलना पर कार्रवाई

हिसार। पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था को मजबूत बनाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत ट्रैफिक नियमों की अवहेलना करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करते हुए 601 वाहनों के चालान किए गए। जिले भर में चलाए जा रहे विशेष ट्रैफिक प्रवर्तन अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। अभियान के दौरान बिना हेलमेट वाहन चलाना, सीट बेल्ट का प्रयोग न करना, ओवर स्पीडिंग, गलत दिशा में वाहन चलाना, मोबाइल फोन का उपयोग करते हुए वाहन चलाना तथा अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई अमल में लाई गई। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने स्पष्ट किया है कि यातायात नियम केवल चालान से बचने के लिए नहीं बल्कि स्वयं एवं दूसरों के जीवन की सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं।

दाखिले के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 16 जून निर्धारित

यूजी-पीजी पाठ्यक्रमों में अब तक आए 12700 से अधिक आवेदन

- उच्चस्तरीय रैंकिंग के चलते विद्यार्थियों में गुजवि के कोर्सों के प्रति विश्वास बढ़ा : प्रो. बिश्नोई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विवि में नियमित कोर्सों में इस सत्र में रिकॉर्ड आवेदन प्राप्त हो रहे हैं। शनिवार की सुबह तक विश्वविद्यालय के सभी कोर्सों की लगभग 3500 सीटों के लिए 12 हजार 700 से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। दाखिलों के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 16 जून है। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि गुजविप्रौवि को लगातार मिल रही उच्चस्तरीय राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग के चलते विद्यार्थियों में गुजविप्रौवि के कोर्सों के प्रति विश्वास बढ़ा है। साथ ही विवि सभी कोर्स रोजगारपरक तथा उद्योगों की मांग के अनुरूप हैं। गत सत्र में गुजविप्रौवि परिसर से पहली बार विद्यार्थियों की अतंरराष्ट्रीय प्लेसमेंट भी हुई है। विविका आधारभूत ढांचा विश्व स्तरीय है। विवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए विवि को अब तक पोस्टग्रेजुएट कोर्सों में 2900 तथा अंडरग्रेजुएट कोर्सों में 9550 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। विवि को इंटीग्रेटेड बीएससी (फिजिकल साइंसेज)-एमएससी (भौतिकी/रसायन/गणित), इंटीग्रेटेड बीएससी (लाइफ साइंस)-एमएससी बायोटेक्नोलॉजी /माइक्रोबायोलॉजी/वनस्पति/जूलॉजी /रसायन तथा इंटीग्रेटेड बीएससी (ऑनर्स/रिसर्च)-एमएससी कंप्यूटर साइंस (एआई एवं डेटा साइंस/साइबर सिक्योरिटी) में दाखिले के लिए 1780 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। इंटीग्रेटेड बीबीए-एमबीए के लिए 893, बीए एलएलबी (ऑनर्स) के लिए 861, इंटीग्रेटेड बीसीए-एमसीए के लिए 731, बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी के लिए 675, इंटीग्रेटेड बीकॉम-एमकॉम के लिए 565, एमबीए के लिए 541 तथा इंटीग्रेटेड बीएससी/बीएससी (ऑनर्स/रिसर्च)-एमएससी मनोविज्ञान कोर्स में दाखिले के लिए 345 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। जबकि अन्य अधिकतर कोर्सों में निर्धारित सीटों से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं।

खास खबर

विवि में अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं स्थापित

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि विश्वविद्यालय का आधारभूत ढांचा विश्वस्तरीय है। अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं स्थापित है। 360 डिग्री वर्चुअल टूर से विद्यार्थी घर बैठे ही विश्वविद्यालय के हर विभाग और सुविधा की पूरी जानकारी के सकते हैं। इंटीग्रेटेड बीए-एमए (भगवद्गीता) कोर्स की कक्षाएं जिओ संस्थान कुरुक्षेत्र में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के मार्गदर्शन में लगेंगी।

बीएससी नर्सिंग में 100 सीटों के लिए 1534 आवेदन

हिसार। बीएससी नर्सिंग परीक्षा संचालन का निरीक्षण करते कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई फोटो : हरिभूमि

हिसार। गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में शनिवार को बीएससी नर्सिंग में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा को आयोजन किया गया। कुल 100 सीटों के लिए 1534 आवेदकों ने परीक्षा दी। कुलपति प्रो. नरसीराम ने परीक्षा केंद्रों में जाकर परीक्षा संचालन का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि परीक्षा संचालन के लिए पूरी तैयारियां की गई थी। आवेदकों में विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए जबरदस्त उत्साह था। परीक्षा का संचालन पूरी तरह पारदर्शी तथा निष्पक्ष से रूप से किया गया। उन्होंने आवेदकों तथा उनके अभिभावकों से बात भी की। नर्सिंग विभाग की चेयरपर्सन प्रो. सुमित्रा सिंह ने बताया कि नर्सिंग विभाग में कुल 1833 आवेदकों ने आवेदन किया था। 299 आवेदक अनुपस्थित रहे। आवेदकों तथा अभिभावकों की सुविधा के लिए विश्वविद्यालय परिसर में हेल्प डेस्क स्थापित किए गए थे। यातायात तथा परीक्षा के दौरान अभिभावकों के ठहरने की भी पूरी व्यवस्था की गई थी। परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जाकर अपना परीक्षा परिणाम देख सकते हैं।

हिसार। कार्यक्रम को संबोधित करते विधायक रणधीर पनिहार। फोटो : हरिभूमि

सरकार ने12 साल में स्थापित किए नए आयाम : रणधीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

केंद्र सरकार के 12 वर्ष के कार्यकाल के दौरान सेवा, सुशासन और जनकल्याण के स्वर्णिम अध्याय विषय पर शनिवार को विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नलवा विधानसभा क्षेत्र के विधायक रणधीर पनिहार एवं मेयर प्रवीण पोपली ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लेते हुए केंद्र सरकार की पिछले 12 वर्षों की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। विधायक रणधीर पनिहार ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचा है। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित होने से समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के जीवन में भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिला है। उन्होंने कहा कि सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण की भावना के साथ सरकार ने विकास के नए आयाम स्थापित किए हैं।

करोड़ों नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार आया : मेयर मेयर प्रवीण पोपली ने प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन तथा डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इनसे करोड़ों नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार आया है और देश विकास की नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर हुआ है।

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर एएसपी मयंक मुद्गिल, एसडीएम ज्योति मित्तल, अतिरिक्त निगमायुक्त प्रदीप हुड्डा, सीईओ सुभाष चंद्र, डीडीपीओ नरेंद्र, डिप्टी सिविल सर्जन डॉ सुभाष खतरेजा, जिला आयुष अधिकारी डॉ. धर्मपाल पूनिया, जिला खेल अधिकारी नरेश सैनी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक वीरेंद्र श्योराण सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में हरियाणा के लाल ने लहराया परचम

एसआई सुरेश जाखड़ ऑल राउंड बेस्ट अवार्ड से सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी, हैदराबाद में आयोजित 39वें सहायक कमांडेंट बैच एवं 9वें उप निरीक्षक बैच के दीक्षांत समारोह में हरियाणा के हांसी जिला स्थित गांव खेड़ी गंगन के सब इंस्पेक्टर सुरेश कुमार जाखड़ ने प्रदेश का नाम रोशन किया। तेलंगाना के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला ने प्रशिक्षण के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एसआई सुरेश कुमार जाखड़ को सम्मानित किया। सुरेश जाखड़ ने अकादमी में 'ऑल राउंड बेस्ट' का गौरव हासिल कर विशेष सम्मान प्राप्त किया। बता दें कि सुरेश कुमार जाखड़ हांसी के गांव खेड़ी गंगन निवासी सतबीर सिंह जाखड़ के पुत्र हैं। उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और कड़ी मेहनत से न केवल गांव और जिले का, बल्कि पूरे हरियाणा का नाम देशभर में गौरवान्वित हुआ है।

हांसी। एसआई सुरेश जाखड़ ऑल राउंड बेस्ट अवार्ड प्रदान करते तेलंगाना के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला। फोटो : हरिभूमि

कम्युनिटी सेंटर में रक्तदान शिविर आज

हिसार। वार्ड 16 आरडब्लूए की ओर से कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी के जन्मदिवस पर 14 जून रविवार को पटेल नगर कम्युनिटी सेंटर में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन पार्षद राजेन्द्र बिड़लान की अध्यक्षता में व उनकी टीम के सहयोग से किया जा रहा है। वार्ड 16 के पार्षद राजेन्द्र बिड़लान ने बताया कि रक्तदान शिविर का शुभारंभ 14 जून को कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी करेंगे। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान होता है और रक्तदान करने से न केवल किसी जरूरतमंद मरीज की जान बचती है, बल्कि रक्त दाता के अपने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार होता है। उन्होंने बताया कि रक्तदान शिविर में नगर के वरिष्ट चिकित्सकों की देखरेख में रक्त बैंक की टीम उपस्थित रह कर अपनी सेवाएं देंगी।

एक स्वस्थ व्यक्ति नियमित अंतराल से कर सकता है रक्तदान : श्योराण

- विश्व रक्तदाता दिवस पर रक्तदान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर दिव्यांग एकाधिकार पुनर्वास ट्रस्ट द्वारा रक्तदान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के यूथ रेड क्रॉस के फील्ड कोर्डिनेटर सुरेन्द्र श्योराण उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को रक्तदान के महत्व, आवश्यकता एवं समाज में इसकी भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रक्तदान एक महादान है, जिससे अनेक लोगों का जीवन बचाया जा सकता है। उन्होंने रक्तदान से जुड़े विभिन्न भ्रमों एवं मिथ्यों को दूर करते हुए इसके स्वास्थ्य संबंधी लाभों पर भी प्रकाश डाला। श्योराण ने कहा कि एक स्वस्थ व्यक्ति नियमित अंतराल पर सुरक्षित रूप से रक्तदान कर सकता है तथा उसका यह योगदान किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवनदान साबित हो सकता है। उन्होंने युवाओं से स्वैच्छिक रक्तदान के लिए आगे आने और समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर राजपाल सिंह बासनीवाल ने कहा कि रक्तदान मानवता की सेवा का सर्वोत्तम माध्यम है। उपस्थित विद्यार्थियों ने रक्तदान के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने तथा भविष्य में स्वैच्छिक रक्तदाता बनने का संकल्प लिया।

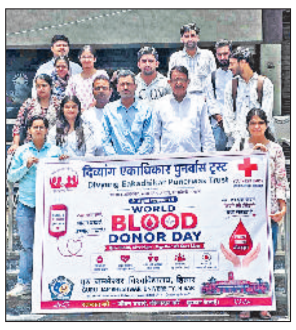

हिसार। रक्तदान जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

श्री कृष्णा स्पोर्ट्स शूटिंग अकेडमी के जतिन ने जीता स्वर्ण

हिसार। दिल्ली स्थित डॉ. करणी सिंह शूटिंग रेंज में आयोजित इंटर स्कूल स्टेट लेवल शूटिंग चैंपियनशिप में डाबड़ा चौक स्थित श्री कृष्णा स्पोर्ट्स शूटिंग अकेडमी के प्रतिभावान शूटर जतिन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया। इस उपलब्धि से न केवल अकेडमी बल्कि पूरे हिसार व हरियाणा का नाम भी गौरवान्वित हुआ है। अकेडमी के संचालक एवं मुख्य कोच कपिल कुमार ने बताया कि यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 2 जून से 12 जून तक नई दिल्ली में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न स्कूलों एवं शूटिंग अकादमियों के खिलाड़ियों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कड़े मुकाबलों के बीच जतिन ने उत्कृष्ट एकाग्रता, तकनीकी दक्षता और आत्मविश्वास का परिचय देते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

नागरिक अस्पताल में बिना ऑपरेशन प्लास्टर से जोड़ा युवक का टूटा जबड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौंद

शहर के 100 बेड वाले नागरिक अस्पताल से स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर एक बड़ी कामयाबी की खबर सामने आई है। अस्पताल के डेंटल सर्जन ने सड़क हादसे में घायल एक युवक के टूटे हुए जबड़े का बिना किसी ऑपरेशन के, सिर्फ वायर और प्लास्टर की मदद से पहला सफल इलाज करने में सफलता हासिल की है। इस आधुनिक इलाज के बाद अब स्थानीय ग्रामीणों को दांत और जबड़े से जुड़ी गंभीर समस्याओं के लिए दूर-दराज के बड़े शहरों अस्पतालों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। जानकारी के अनुसार, गांव जमालपुर के रहने वाले 22 वर्षीय युवक मनजीत एक मोटरसाइकिल दुर्घटना का शिकार हो गए थे। रिजनों ने उन्हें तुरंत नारनौंद के नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल में तैनात डेंटल सर्जन डॉ. देवेंद्र कुमार ने जब मरीज की गहन जांच की, तो निचले जबड़े में फ्रैक्चर की पुष्टि हुई। डॉ. देवेंद्र ने मरीज और उनके परिजनों के सामने इलाज के दो विकल्प रखे। ऑपरेशन से जबड़े में पत्ती डालकर इसको ठीक किया जा सकता है। इसका बिना ऑपरेशन भी इलाज हो सकता हैं। उसके लिए मरीज को चार सप्ताह तक मुंह बंद रखना होता है। दोनों ऑप्शन में से मंजीत ने बिना पत्ती डालने वाले इलाज करवाने का ऑप्शन चुना। डॉ. देवेंद्र कुमार ने अपनी टीम के साथ करीब दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद 26 गोज वायर और आर्च वायर की तकनीक का इस्तेमाल करते हुए जबड़े को बिना चीर-फाड़ के अपनी सही जगह पर सेट कर दिया।

नारनौंद। नागरिक अस्पताल में मरीज का इलाज करते हुए डाक्टर देवेंद्र कुमार व अन्य। फोटो : हरिभूमि

डॉ. आंबेडकर लाइब्रेरी का नाम बदलना सामाजिक न्याय की विचारधारा पर हमला : बृजलाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार । जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बृजलाल बहबलपुरिया ने डॉ. भीमराव आंबेडकर के नाम पर संचालित लाइब्रेरी का नाम बदलकर पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर किए जाने के निर्णय की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि यह केवल एक नाम बदलने का मामला नहीं, बल्कि संविधान निर्माता और सामाजिक समानता के प्रतीक डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को कमतर आंकने का प्रयास है। बृजलाल बहबलपुरिया ने कहा कि डॉ. आंबेडकर का नाम देश के करोड़ों वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों के आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है। वर्षों से उनके नाम से पहचानी जाने वाली लाइब्रेरी का नाम बदलना समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला निर्णय है।

सरकार को इस प्रकार के फैसले लेने से पहले जनता की भावनाओं और ऐतिहासिक तथ्यों का सम्मान करना चाहिए। बृज लाल बहबलपुरिया ने मांग की कि डॉ. भीमराव अंबेडकर लाइब्रेरी का मूल नाम तत्काल प्रभाव से बहाल किया जाए।

साइबर ठगी के पीड़ितों को वापस दिलवाई राशि

हिसार। आदमपुर पुलिस ने साइबर अपराधों कार्रवाई करते हुए साइबर ठगी से ठगे गए डेढ़ लाख रुपये उसे वापिस दिलवाए हैं। आदमपुर थाना के पीएसआई हरिओम ने लगातार इस मामले में कार्रवाई करते हुए पीड़ित से ठगे गए एक लाख 54 हजार रुपये की राशि सफलतापूर्वक रिफंड करवाई गई। एक अन्य मामले में साइबर पुलिस ने पीड़ित से ठगे गए एक लाख 46 हजार 600 रुपये की राशि सफलतापूर्वक वापस करवाई गई। उधर, साइबर अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत अग्रोहा थाना के साइबर हेल्प डेस्क को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। साइबर हेल्प डेस्क की मुस्तैदी और त्वरित एक्शन के कारण एक पीड़ित व्यक्ति के खाते से धोखाधड़ी कर उड़ाए गए 20 हजार की शत-प्रतिशत राशि सुरक्षित वापस दिला दी गई है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित ने कहा था कि उसके साथ 20 हजार की ऑनलाइन साइबर धोखाधड़ी हुई है। पुलिस ने तुरंत केस दर्ज करके पीएसआई संजय कुमार और उनकी टीम ने जांच शुरू की। टीम ने तुरंत उस बैंक और पेमेंट गेटवे से संपर्क साधा जहां धोखाधड़ी की राशि ट्रांसफर की गई थी। पुलिस की त्वरित और सटीक कार्रवाई के चलते फ्रॉड की गई पूरी राशि 20 हजार को समय रहते फ्रीज करवा दिया गया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

जिलेभर में चलाया गया पर्यावरण संरक्षण अभियान

हिसार । भाजपा की जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़ के नेतृत्व में जिले की सभी विधानसभाओं में व्यापक स्तर पर पौधारोपण अभियान चलाया गया। इस अवसर पर पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। अभियान में भागीदारी करते हुए जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़ ने कहा कि पेड़ पौधे हमारे जीवन का आधार हैं और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पौधारोपण के साथ-साथ उनकी देखभाल का भी संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी केवल राजनीति व विकास कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं पर्यावरणीय दायित्वों के निर्वहन के लिए भी निरंतर कार्य कर रही है। पौधारोपण अभियान का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं हरित वातावरण सुनिश्चित करना है।

पर्यावरण सुरक्षा वन विभाग ने पौधरोपण अभियान किया शुरू

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता : विधायक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत लघु सचिवालय परिसर में वन विभाग द्वारा पौधरोपण अभियान का शुभारंभ किया गया। नलवा विधानसभा क्षेत्र के विधायक रणधीर पनिहार और मेयर प्रवीण पोपली ने पौधरोपण कर अभियान की शुरुआत की तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

इस अवसर पर विधायक रणधीर पनिहार ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अधिक से अधिक पौधे लगाकर तथा उनकी देखभाल कर हम आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने नागरिकों से भी पौधारोपण अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया। पौधरोपण कार्यक्रम में उपायुक्त महेंद्र पाल, अतिरिक्त उपायुक्त शालिनी चेतल, एसडीएम ज्योति मित्तल, एएसपी मयंक मुद्गिल तथा वन मंडल अधिकारी (डीएफओ) रोहतास बीरथल ने भी पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों एवं उपस्थित गणमान्य नागरिकों ने पर्यावरण संरक्षण, हरित आवरण बढ़ाने तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने का संकल्प लिया।

हिसार। पलघु सचिवालय परिसर में पौधरोपण करते विधायक व अन्य।

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर सीईओ सुभाष चंद्र, डीडीपीओ नरेंद्र, जिला आयुष अधिकारी डॉ. धर्मपाल पूनिया, जिला खेल अधिकारी नरेश सैनी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक वीरेंद्र श्योराण सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

रिलेशनशिप का नया ट्रेंड डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड

हाल के वर्षों में एआई ने अनेक प्रोफेशंस में जबर्दस्त बदलाव कर दिया है। अब प्रोफेशंस से भी आगे बढ़कर रिलेशनशिप में भी इसका दखल बढ़ने लगा है। इसका प्रमाण है, रियल के बजाय डिजिटल पार्टनर बनाने का बढ़ता ट्रेंड। यह ट्रेंड क्या है, यह क्यों बढ़ रहा है और आने वाले समय में इसके किस तरह के असर हम सभी को देखने को मिल सकते हैं, इसका डिटेल्ड एनालिसिस।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

भले ही आज यह बात आपको थोड़ा असहज कर सकती है, लेकिन यह सच है कि रिलेशनशिप का नया ट्रेंड तेजी से सामने आ रहा है, वो है डिजिटल गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड। डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड (जीएफ/बीएफ) कोई साधारण ट्रेंड नहीं है, बल्कि इंसानी रिश्तों के ढांचे में अभूतपूर्व बदलाव की शुरुआत है।

रियल पार्टनर जैसी फीलिंग

आज एआई आधारित एप्स और विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे रिपेलिका और करेक्टर एआई मौजूद हैं, जो यूजर के साथ उसी तरह रोमांटिक, भावनात्मक या निजी बातचीत करते हैं, जैसे ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड आपस में करते हैं। ये आपकी पसंद ही नहीं भावनाओं को भी समझते हैं, आपकी बातों पर प्रतिक्रिया देते हैं और पर्सनल पार्टनर जैसा अनुभव देते हैं।

करोड़ों लोग हैं एक्टिव

डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड कोई रेयर या एक्सेप्शनल फिनोमिना नहीं है। सच्चाई तो यह है कि अगर एआई कंपेनियनशिप एप्स के आंकड़ों को मानें तो इस समय दुनिया में 5 से 6 करोड़ जीएफ/बीएफ सक्रिय रूप में मौजूद हैं। पूरी दुनिया में 10 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो इनके साथ किसी न किसी रूप से चैटबॉट्स के जरिए जुड़ते हैं। इनमें सिर्फ रिपेलिका के ही 3-4 करोड़ यूजर हैं, जबकि करेक्टर एआई के 2 करोड़ सिर्फ मंथली एक्टिव यूजर हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि दुनिया के 21 फीसदी वयस्क एआई कंपेनियनशिप का इस्तेमाल कर चुके हैं और 72 फीसदी किशोर कम से कम एक बार ऐसे एआई से बातचीत की है। मतलब यह कि अब यह कुछ थोड़े से लोगों का शौक या प्रयोग भर नहीं है बल्कि यह बड़ी जनसंख्या का न्यू नॉर्मल व्यवहार है।

अपने देश में भी बढ़ रहा ट्रेंड

भारत भी इस मामले में पीछे नहीं है। हालांकि भारत के अलग से सटीक आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इसका बढ़ता ट्रेंड साफ तौर पर देखा जा सकता है। और ऐसा हो भी क्यों न, आखिर भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर देश है। भारत में एक अरब से ज्यादा मोबाइल फोन इस्तेमाल में हैं और इनमें 80 करोड़ से ज्यादा में इंटरनेट का इस्तेमाल होता है। अगर एआई एप्स डाउनलोड ग्रोथ 2023-24 को देखें, तो भारत में इसकी रफ्तार 1400 फीसदी रही है यानी, हाल के सालों में भारत में एआई एप्स को डाउनलोड करने की रफ्तार 14 गुना तक बढ़ी है। क्योंकि भारत में मोबाइल फोन के सबसे बड़े उपभोक्ता 18 से 30 साल के युवा हैं। इसलिए भी भारत में एआई कंपेनियनशिप की मांग अविश्वसनीय रफ्तार से बढ़ रही है। क्योंकि इंटरनेट इस्तेमाल करने वाला यही वर्ग (18-30) सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर वर्ग है। इसके बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि भारत में यह सिलसिला अभी शुरुआती चलन में है, भले इसकी रफ्तार बहुत तेज हो।

इस ट्रेंड के बढ़ने की वजहें

सवाल है, आखिर इंसानों को डिजिटल जीएफ और बीएफ तक जाने की जरूरत ही क्यों पड़ी? यानी हम आखिर यहां पहुंचे क्यों और कैसे? इसका सबसे बड़ा कारण है लोगों में बढ़ता अकेलापन। शहरी जीवन, काम का दबाव, टूटते सामाजिक नेटवर्क और भावनात्मक सहारा ढूंढ़ते युवा। वास्तव में यही वजहें हैं, जिनके चलते पिछले कुछ सालों में ही डिजिटल जीएफ/बीएफ की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। असली रिश्तों में लगातार बढ़ती असहमति, समझौते और जिम्मेदारियां एआई रिश्तों की तरफ हमें मोड़ रही हैं, क्योंकि वहां इस तरह की दुश्वारियां या तो नहीं हैं या इतनी नहीं है कि परेशान करके रख दें। क्योंकि एआई रिश्ते 'कंट्रोल्ड' होते हैं और उनको संभालना आसान होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एआई अब इस कदर एडवांस हो चुका है कि वह लोगों को 'सोचने और समझने' का भी भ्रम पैदा कर रहा है।

रियल रिलेशन होंगे वीक

इस उभरते नए डिजिटल रिलेशन को लेकर गंभीर सवाल यह है कि अगर इस सिलसिले को जल्द रोका न गया, तो क्या होगा? भले ही अभी यह ट्रेंड रोमांचित कर रहा है, लेकिन सच है कि इससे हमारे जैविक रिश्ते आने वाले दिनों में बेहद कमजोर हो सकते हैं। अगर संबंध विशेषज्ञों की मानें तो यह सिलसिला इसी तरह बेकाबू आगे बढ़ता रहा तो असली रिश्ते में दूरियां बढ़ने लगेंगी। हममें से ज्यादातर लोगों के रिश्तों के नाम एआई पार्टनर होंगे, क्योंकि एआई पार्टनर झगड़ा नहीं करते और हमेशा आपकी हां में हां मिलाते हैं। इससे असली रिश्ते जटिल लगने लगते हैं और एआई रिश्ते आकर्षक हो जाते हैं। जो लोग हर दिन एआई के साथ एक से दो घंटे के लिए संपर्क में रहते हैं, उन्हें एआई से लगाव हो जाता है। वे उसे अपने पार्टनर के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। यह वैसा ही है, जैसे सोशल मीडिया एडिक्शन। पर, यह उससे भी एक कदम आगे का एडिक्शन है, क्योंकि इससे हमारे न सिर्फ भावनात्मक रिश्ते पर चोट लग रही है बल्कि इसके कारण हमारे समाज का सदियों से मौजूद पारंपरिक ढांचा दरकने लगा है।

मेंटल हेल्थ पर बुरा असर

डिजिटल रिलेशन का असर सिर्फ भावनात्मक रिश्तों तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि बढ़ते जीएफ/बीएफ ट्रेंड के कारण हमारे युवाओं के मेंटल हेल्थ पर भी गंभीर असर पड़ता है, क्योंकि शुरुआत में ये डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड भले राहत देते हों, लेकिन जब आप लगातार इनके टच में रहते हैं या इनका इस्तेमाल करते हैं, तो ये न केवल आपको अकेलेपन के दलदल में खींच ले जाते हैं बल्कि आपको कई तरह की हताशाओं और निराशाओं से भी भर देते हैं। अकसर एआई कंपेनियनशिप के साथ जो लोग खुश होते हैं, उन्हें नजदीक के इंसानों से रिश्ते बनाने में बड़ी मुश्किल लगती है और अगर किसी तरह से इनके रिश्ते बन भी गए, तो उन्हें यह रिश्ते बहुत पसंद नहीं आते। *

बढ़ सकती हैं कई तरह की समस्याएं

डिजिटल जीएफ/बीएफ का बढ़ता ट्रेंड सचमुच में डरावना है। इससे आने वाले समय में कई समस्याएं सामने आ सकती हैं। इसके बढ़ने से शादी और परिवार की संस्था कमजोर होगी। कस्टम पार्टनर की आदत यानी हम जैसा साथी चाहते हैं या दूसरे शब्दों में अपनी कल्पना के साथी की तलाश में रहने लगेंगे। अगर यह चलन इसी तरह तेजी से बढ़ता रहा, तो देश और दुनिया में अकेले रहने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाएगी। कई विशेषज्ञों के मुताबिक तो अगले दो-तीन दशकों में अकेले रहने वाले लोग, साथ में रहने वाले लोगों से भी ज्यादा हो सकते हैं। इससे सामाजिक दूरी भी बढ़ेगी। यह ट्रेंड मानव समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

इंसानी सभ्यता की शुरुआत से ही हमेशा जवान, खूबसूरत दिखने की चाहत रही है। इसे पाने के लिए नेचुरल तरीकों से लेकर, साइंस, दवाएं और अब एआई तक का यूज किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही खूबसूरती का कोई पर्मानेंट सॉल्यूशन हमें मिल जाएगा।

पर्मानेंट खूबसूरती की चाहत जल्द मिल सकता है सॉल्यूशन

{ टेक्नोसाइंस / प्रतिमा अरोड़ा }

इंसानी खूबसूरती का क्या कोई स्थायी और सार्वभौमिक फार्मूला हो सकता है? 19वीं शताब्दी से ही विज्ञान इस सवाल का जवाब ढूंढ़ रहा है। आधुनिक विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, जेनेटिक्स और कॉस्मेटिक मेडिसिन का अब लगभग यह केंद्रीय विषय बन चुका है कि दुनिया भर के इंसानों के लिए एक सार्वभौमिक खूबसूरती का पैमाना क्या हो और इसे पूरी दुनिया के स्तर पर संभव कैसे बनाया जाए? यह सोच और यह खोज इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इंसान सदियों से सुंदर होने के उपाय खोजता रहा है। कभी प्राकृतिक नुस्खों से, कभी शल्य चिकित्सा से, कभी जीन एडिटिंग से, तो अब एआई आधारित तकनीकों से भी।

खूबसूरती की खोज की शुरुआत

19वीं सदी के अंत से ही वैज्ञानिक इंसान की स्थायी खूबसूरती का समाधान खोज रहे हैं। विशेषकर जब से शरीर रचना विज्ञान यानी एनाटॉमी और त्वचा विज्ञान यानी डर्मेटोलॉजी का व्यवस्थित विकास हुआ। तभी से विज्ञान कुछ बातों पर फोकस कर रहा है। जैसे-त्वचा की संरचना का विज्ञान क्या है और इसे हमेशा जवान कैसे बनाए रखा जा सकता है? आखिर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया क्या है और इसे कैसे रोका जा सकता है? हार्मोन और सौंदर्य के बीच क्या संबंध हैं, क्या हार्मोन में ही इंसानी सौंदर्य का रहस्य छिपा है? 20वीं सदी के मध्य में प्लास्टिक सर्जरी के बाद कॉस्मेटिक सर्जरी लगभग चमत्कार की तरह उभरकर सामने आई। इस दौर में अनेक जैविक शोधों से यह स्पष्ट हुआ कि त्वचा का रंग, बालों की बनावट, चेहरे की आकृति और झुर्रियां इन सबका बड़ा हिस्सा जीन द्वारा नियंत्रित होता है। अतः जीन नियंत्रण का विज्ञान समझ लिया जाए तो एक तरह से खूबसूरती पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सौंदर्य का केंद्र जेनेटिक्स

साल 2003 में ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट लांच हुआ और यह विज्ञान के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इससे यह समझ में आया कि मानव शरीर में मौजूद हजारों जीन, हमारे शरीर की अलग-अलग संरचनाओं और गुणों के लिए जिम्मेदार हैं। इस शोध से पता चला त्वचा की मोटाई का कारण क्या है? कोलेजन का उत्पादन कैसे होता है? उम्र बढ़ने की गति क्या होती है? बाल झड़ते क्यों हैं? केंद्रीय रूप से इन सबके पीछे विशिष्ट कारण सिर्फ जीन हैं। आज वैज्ञानिक जीनों की पहचान करके एजिंग के रहस्य का पर्दाफाश करने में लगे हैं। इस शोध और लगातार कोशिश का निष्कर्ष यह है कि सैद्धांतिक रूप से जीन स्तर पर बदलाव करके उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है।

प्रभावी है कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी

हालांकि कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी अभी अस्थायी ही है। लेकिन निश्चित रूप से यह सौंदर्य विज्ञान का सबसे विकसित क्षेत्र है और एस्थेटिक मेडिसिन को भविष्य इंसान की खूबसूरती को स्थायी रूप देने में सक्षम माना जा रहा है। आज इसी विज्ञान के चलते-बोटोक्स, डर्मल फिलर्स, लेजर स्किन रिसर्फेसिंग तथा केमिकल पिल्स जैसी प्रक्रियाओं से लोग अपनी झुर्रियां कम कर रहे हैं। त्वचा को चिकनी, मुलायम और टाइट रख पाने में सफल हो रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि चेहरे को पसंदीदा आकृति देने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि अभी यह 100 फीसदी संभव नहीं है, लेकिन हर गुजरते साल के साथ यह पहले से बेहतर होती जा रही है। इस बात का सबूत है कि बहुत जल्द इंसानी खूबसूरती का स्थायी समाधान बनकर कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी सामने आएगा।

जीन एडिटिंग में है भविष्य

साल 2012 के बाद जीन एडिटिंग तकनीक, जिसे सीआरआईएसपीआर-सीएएस-9 कहा जाता है, ने चिकित्सा जगत में क्रांति ला दी। इस तकनीक के जरिए वैज्ञानिक खराब जीन काट सकते हैं, नए जीन जोड़ सकते हैं, जीन के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। ये सब सहूलियतें उम्मीद जता रही हैं कि भविष्य में इंसान गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, थैलेसीमिया और जेनेटिक डिसऑर्डर से पार पाने में सफल रहेगा। एजिंग के प्रभाव को धीमा किया जा सकता है, बालों के झड़ने को रोका जा सकता है, त्वचा को युवा बनाए रखने की स्थायी तरकीब ढूंढ़ी जा सकता है। लब्बोलुआब यह कि सिर्फ सुंदरता बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए, जीन एडिटिंग की कवायद लगातार जारी है।

एआई और पर्सनलाइज्ड ब्यूटी

एआई आधारित सिस्टम के जरिए अब हम यह जान सकते हैं कि किसी व्यक्ति की त्वचा कितनी बूढ़ी है और वह किस रफ्तार से बूढ़ी हो रही है? वास्तव में इस सारी जानकारी को पर्सनलाइज्ड ब्यूटी प्लान के नाम से जानते हैं और इस प्लान के अस्तित्व में आने के बाद अब अलग-अलग इंसानों का स्वतंत्र रूप से खूबसूरत और स्वस्थ होना ज्यादा आसान और गारंटीड हुआ है। वैज्ञानिकों को भरोसा है कि अब खूबसूरती का स्थायी समाधान हासिल करने में बहुत देर नहीं है। *

{ गजल / सुधा मिश्रा 'तितिक्षा' }

मौसमों की करवटें, इक आईना दिखला रही हैं,
वादियां, यादों के वो लम्हात, फिर दुहरा रही हैं।
जिन निगाहों में कभी, शर्म-ओ-हया की चिलमनें थीं,
हो चुकीं बेलौस, पलकें भी कहां झपका रही हैं।
शादमां है दिल, नजर की बेकरारी रंग पर है,
मस्तियां रुख्सारों पे, कुछ सिलवटें बिखरा रही हैं।
कंपकंपी में गर्म चादर, की तरह उनको लपेटे,
जो गुजारी हैं कभी, रातें वही तड़पा रही हैं।
जेठ की दोपहरियों में, जल रही वीरानियां ये,
चिलचिलाती धूप में, उनको पुकारे जा रही हैं।
भीगते सावन में फिर, झीनी फुहारें लौट आईं,
अश्क पलकों में लिए, परछाइयां टकरा रही हैं।
झूमती रिमझिम घटाएं, तिश्नगी में चूर होकर,
ये हवाएं सरसराती, मस्त हो बल खा रही हैं।
चुप मनाजिर थे मगर, फिर झील से हलचल उठी वो,
कुछ हिलोरें नाव में, तन्हाईयां भी ला रही हैं।
मुंतजिर बैठी 'सुधा', है सब्र का दामन संभाले,
जिंदगी कम पड़ न जाए, फिक्रें ये घबरा रही हैं।

सभी करते थे बाबू जी का सम्मान

{ स्मरण / अरविंद कुमार }

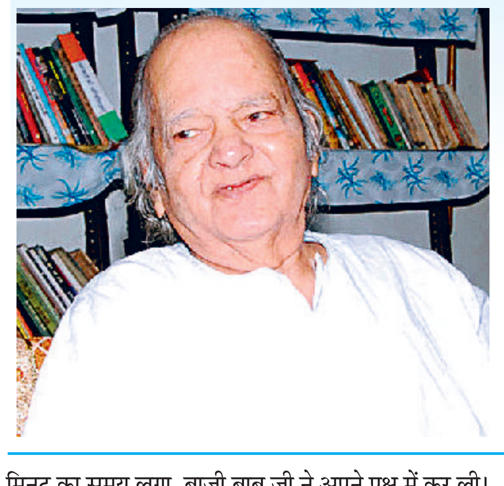

हिंदी के प्रख्यात कथाकार अमरकांत जी का यह जन्मशती वर्ष है। उनकी कहानियों और उपन्यासों से तो अधिकांश साहित्यप्रेमी परिचित हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और स्वभाव में उपस्थित सदाशयता, विनम्रता के बारे में लोग कम ही जानते हैं। उनके सुपुत्र अरविंद कुमार ने अपने पिता से जुड़ी कुछ भावभीनी स्मृतियां **हरिभूमि** से साझा कीं। दुर्भाग्य से कुछ माह पूर्व अरविंद जी का निधन हो गया।

बाबू जी (अमरकांत जी) सपरिवार लखनऊ से जब करेलाबाग कॉलोनी (इलाहाबाद अब प्रयागराज) में आकर रहने लगे तो वहां एक अलग माहौल देखने को मिला। इस कॉलोनी में पांच सौ चार क्वार्टर्स हुआ करते थे, जिसमें हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी रहा करते। वहां बहुत ही सुखद सामाजिक रिश्तों का ताना-बाना, सौहार्दपूर्ण वातावरण देखने को मिला। हर तरफ हरियाली एवं सांस्कृतिक परिवेश का माहौल था। हमारे क्वार्टर के ठीक सामने एक बड़ा अमलतास का पेड़ था। गर्मियों में इसके फूल खिलते तो ऐसा महसूस होता था, जैसे पेड़ पीले गहनों से सजा हुआ है, एक बार नामवर सिंह जी दो-चार लोगों के साथ आए तो इस स्थान ने उन्हें अभिभूत कर दिया, वे बोले, 'अमरकांत जी हम लोग इसी मनोरम जगह पर बैठेंगे। सुबह का समय, यहां की अनुभूति कैसी होती है, महसूस किया जाए।' दरअसल, पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षियों का आवागमन, उनका कलरव मोहक लगता। इसीलिए आने वाले लोगों को यह स्थान मनोरम लगता।

कॉलोनी के बाहर की एक सड़क (नूर उल्लाह रोड, जो स्टेशन से सीधी करेली गांव तक जाती) पर मिस्टर रफी अहमद नाम के व्यक्ति का प्रेस एवं पेपर कटिंग मशीन लगी थी। इस स्थान पर रोजाना दो खेल शतरंज एवं कैरम सायं सात बजे से रात्रि बारह बजे तक नियम से खेला जाता। रफी साहब का बाबू जी से बहुत अच्छा संबंध था। बाबू जी को भी उक्त दोनों खेल पसंद थे। शनिवार के दिन अकसर वहां उनका इंतजार रहता। बगल के मोहल्ला रसूलपुर से भी शतरंज और कैरम में रुचि रखने वाले कुछ लोग आते, जिसमें दो नाम खासतौर पर मुझे याद हैं एक बहार आलम, जो पेशे से वकील, साहित्य कला में भी दिलचस्पी रखते थे। और उनके छोटे भाई नन्हे पहलवान भी उनके साथ आया करते थे। एक रोज की बात है, मां ने मुझसे कहा, 'रात अधिक हो गई है। रफी अहमद के यहां जाकर देखो बाबू जी अभी आए क्यों नहीं?' मैं कुछ ही समय पश्चात वहां पहुंच गया। खेल में बड़ी खामोशी थी। शतरंज की अंतिम बाजी पर लोगों की निगाहें गड़ी हुई थीं। कई शोहरतमंद गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी में खेल हो रहा था। उर्दू अनुवादक हुनर साहब, स्थानीय विधायक हबीब अहमद आपस में बाजी लगा बैठे थे। बाबू जी की दूसरी तरफ खिलाड़ी बहार आलम थे। पंद्रह मिनट का समय लगा, बाजी बाबू जी ने अपने पक्ष में कर ली। सभी बाबू जी को बधाई देने लगे। पर वे बहार आलम के खेल की सराहना करते जा रहे थे, 'बहुत अच्छा खेला आपने।' बाबूजी का स्वभाव ऐसा ही था, उनमें दंभ जरा भी नहीं था।

बाबूजी से जुड़ी एक और स्मृति याद आ रही है। अक्टूबर 1987 का दिन, वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। वे मेटाबॉलिक बोन डिजीज से ग्रसित हो गए। उन्हें स्पाइनल कॉर्ड में इंफेक्शन हो गया था। प्रारंभ में कई डॉक्टरों से संपर्क किया गया, डॉक्टरों ने जॉगिंग और एक्सरसाइज करने की सलाह दी। उन्हें पेनकिलर के सहारे मुक्त कर दिया गया। समस्या यह हो गई कि उन्हें कोई भी खान-पान की चीज अच्छी नहीं लग रही थी और उनके बैक बोन में असहनीय दर्द था। मेडिकल कॉलेज के हड्डी के एक्सपर्ट डॉक्टरों ने कहा, 'घबराने की बात नहीं है उम्र का तकाजा है।' जबकि ऐसी भी उम्र नहीं थी कि उस पर दोष मढ़ा जाए। बहरहाल, वे घर आ गए। मगर समस्या जस की तस बनी रही।

वे उन दिनों महिलाओं की पत्रिका 'मनोरमा' का संपादन कर रहे थे, किंतु स्वास्थ्य की वजह से असमर्थ हो गए थे। इसकी जानकारी डॉ. शांति चौधरी जी को हुई तो वे भागे-भागे घर पर आईं और पूरी जानकारी ली। उन्होंने अगले दिन इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में वीआईपी वार्ड बुक करवाया। सभी चेकअप हुए। जानकारी मिली कि बाबू जी का हीमोग्लोबिन चार प्रतिशत पर आ गया है, जोकि बहुत ही चिंताजनक था। नामी विशेषज्ञ डॉक्टर ने देखा। बाबू जी दो दिन अस्पताल में रहकर वापस घर आ गए। शांति चौधरी जी, बाबू जी को पिता तुल्य मानती थीं। हम लोगों का उनसे बहुत आत्मीय रिश्ता रहा है। वह 'मनोरमा' से विशेष कार्याधिकारी के रूप में जुड़ी थीं और इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में पीआरओ के पद पर थीं।

कुछ दिनों तक जब बाबू जी की सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ तो चिंता हुई। तभी उन्हें देखने के लिए एस. के. दुबे आए जो टाइम्स ऑफ इंडिया के ब्यूरो चीफ थे। उन्होंने बताया डॉ. आर. सी. गुप्ता ऑस्ट्रेलिया से आ गए हैं, एक बार उन्हें बाबू जी को दिखाया जाएगा। उस समय रात्रि के आठ बजे हुए थे। लेकिन मुझे दूसरे दिन पर न टालकर रात्रि में ही ले जाना उचित लगा।

क्लीनिक बंद होने का समय रात्रि नौ बजे तक था। हम लोग पौने नौ बजे अस्पताल पहुंच गए। काउंटर बंद हो रहा था। डॉक्टर के असिस्टेंट डॉ. ए. के. सिंह ने बताया कि आप फीस जल्दी जमा कर दें, डॉ. साहब उठने वाले हैं। तभी डॉ. आर. सी. गुप्ता हम लोगों के समीप आए। उनकी पोशाक, पैर में खड़ाऊ और खद्दर का कुर्ता-पाजामा। पूछा, 'इन्हें क्या हो गया?' मैंने सभी बातें बताईं। उन्होंने असिस्टेंट डॉ. सिंह से कहा कि उस जगह का एक्स-रे करें जहां दर्द है। मैंने बताया प्रेस में जॉब करते हैं। फिर उनका सवाल था खड़े होकर काम करते हैं या बैठकर? मैंने कहा, 'बैठकर ही करते हैं।'

डॉक्टर गुप्ता ने पूछा, 'प्रेस कहां पर है?' जब मैंने प्रेस का नाम बताया, तो बोले, 'अरे यह प्रेस तो बहुत बड़ा है। यहां से तो पांच-छह मशहूर पत्रिकाएं निकलती हैं माया, मनोरमा, सत्यकथा, मनोहर कहानियां, प्रोब इंडिया। मनोरमा के संपादक तुम्हारे पिता के नाम वाले ही हैं, उनका नाम अमरकांत है, मगर वह बड़े राइटर हैं।'

मैंने जब उनसे कहा कि वे यही हैं। इस पर पहले तो डॉक्टर साहब मुझे कुछ सेकेंड एकटक देखते रहे फिर उठकर एक्स-रे रूम में गए। कुछ सेकेंड में डॉक्टर ए. के. सिंह जी बाहर आए और रसीद काउंटर रूम में गए। मेरे जमा किए गए पैसे लाकर विनम्रतापूर्वक मुझे दे दिए। बोले, 'डॉक्टर साहब ने पैसे वापस करने के लिए कहा है।' डॉक्टर आर. सी. गुप्ता पंद्रह-बीस मिनट में अपने चैंबर में वापस आ गए, बोले, 'जो मुझे शक था वही निकला।' उन्होंने अपने क्लीनिक से पूरे एक माह की दवा मुझे दी। मैं पैसे निकालने लगा, तो मना कर दिया, फिर बोले 'इनका पूरा इलाज मैं करूंगा। आपको कोई तनाव नहीं लेना है। मैं आपके साथ हूं। मुझे अमरकांत जी की सेवा करने का मौका मिला, मेरा सौभाग्य है। मैं कमिश्नर, मंत्री के घर नहीं जाता हूं, लेकिन मैं आपके घर नियमित आकर इनको देखूंगा। अस्पताल आने की जरूरत नहीं है, घर पर ही सभी इंतजाम करवा दूंगा।' उन्होंने सच में ऐसा ही किया। घर पर ही बाबू जी को ट्रैक्शन लगवाया, साथ ही कमर से लेकर छाती तक प्लास्टर भी करवाया। छह माह तक वे बाबू जी को देखने घर नियमित आते रहे, न कभी फीस लिया और दवा, इंजेक्शन के खर्च से भी मुक्त रखा। बाबू जी छह माह ट्रैक्शन, प्लास्टर और दवा पर रहे, सीधे लेटे रहते। मर्ज जरूर दूर हो गया किंतु स्पाइनल कॉर्ड डिफार्मर हो गया। बाबू जी को कष्ट तो बहुत रहा लेकिन डॉक्टर आर. सी. गुप्ता जैसे लोगों का उनके प्रति आदर और प्रेम देखकर मैं अभिभूत हो जाता था। बाबू जी इतने बड़े लेखक-संपादक थे लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना सरल रहता कि हर कोई उनका सम्मान करता था। *

सैर-सपाटा
अंशु सिंह

भारत के उत्तरपूर्व में छोटा सा प्रदेश है- सिक्किम। इसका एक तिहाई हिस्सा बायोस्फीयर रिजर्व और यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है, जहां दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी, माउंट कंचनजंगा स्थित है। यहां की संस्कृति मिली-जुली है। खाना अनोखा है, नजारे शानदार, सड़कें साफ-सुथरी और माहौल बहुत शांत है। कुछ समय पूर्व ही सिक्किम की यात्रा से लौटीं लेखिका इसकी खूबसूरती बयां कर रही हैं अपनी जुबानी।

जन्नत से कम नहीं सिक्किम

हालांकि देश के अलग-अलग हिस्से में यात्राएं तो मैंने कई की हैं। लेकिन अब तक देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों में से कहीं जाना नहीं हुआ था। इसलिए जिस दिन सिक्किम यात्रा का प्लान फाइनल हुआ, उस दिन से मन में एक अलग-सा उल्लास भर गया था। दिल्ली से सिक्किम जाने के दो विकल्प थे- ट्रेन या हवाई जहाज। हमारे समूह ने ट्रेन से जाने का निर्णय लिया। दिल्ली से पहले पश्चिम बंगाल के नई जलपाईगुड़ी और फिर वहां से प्राइवेट कैब लेकर गंगटोक। यह यात्रा काफी दिलचस्प रही। पहाड़, जंगल, संग-संग बहती तीस्ता नदी और छोटे-छोटे गांव, कस्बों को पार करते हुए आखिरकार हम गंगटोक पहुंचे।

गंगटोक ने मोह लिया मन

हिमालय की गोद में बसा गंगटोक एक ऐसा स्थान है, जहां बादल पहाड़ों के साथ अठखेलियां करते हैं, तो नदियां अपनी ही धुन में गीत गाती बहती हैं। यह नजारा किसी जन्नत से कम नहीं लगता। जैसे ही सूरज की किरणें बर्फ से ढंकी चोटियों को चूमती हैं, नीचे हरी-भरी घाटियों पर सुनहरी आभा बिखर जाती है। अपने रंग-बिरंगे बौद्ध मठों, बाजारों और मोहक नजारों से सजा गंगटोक बेमिसाल है। सिक्किम की यह राजधानी दुनिया के कुछ सबसे शानदार बौद्ध मठों का घर है, जिसमें सबसे मशहूर मठ है रुमटेक मठ। गंगटोक से करीब 21 किमी दूर स्थित इस मठ के शांत माहौल में आप रम जाएंगे। इसके अलावा, बीच शहर में स्थित गोनजैंग मठ भी कम मनमोहक नहीं है। शहर के अन्य आकर्षणों में बानझाकरी वॉटरफॉल, ताशी व्यू प्वाइंट, गणेश टोक, हनुमान टोक, गैंगटोक रोप-वे राइड, हिमालयन जूलॉजिकल पार्क और ऑर्किडेरियम मुख्य हैं।

टेमी टी गार्डन से कंचनगंजा के दीदार

गंगटोक पहुंचने के दूसरे दिन, सुबह नाश्ता करके हम सभी पश्चिम सिक्किम के पेल्लिंग के लिए रवाना हुए, जो करीब 130 किमी. दूर था। हमारा पहला पड़ाव टेमी चाय बागान था। यह सिक्किम का एकमात्र टी गार्डन है, जहां ऑर्गेनिक चाय की पैदावार होती है। घुमावदार रास्तों से जब हमने इस गार्डन में प्रवेश किया, तो वहां की खूबसूरत छटा देखते ही रह गए। मौसम साफ था, तो वहां से कंचनजंगा चोटी के दीदार भी हुए। कुछ समय बिताने के पश्चात हम आगे बढ़े। शाम करीब 4.15 बजे हम पेल्लिंग स्थित अपने होम स्टे पर पहुंच गए। वहां सभी का स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार, स्वागत हुआ। लेकिन तब तक मौसम का रंग बदल चुका था। रिमझिम शुरू हो गई। अगली सुबह भी बारिश थमी नहीं। लेकिन नौ बजते-बजते आसमान साफ होने लगा। हम निकल पड़े पेल्लिंग की ओर।

पश्चिमी सिक्किम का नगीना-पेल्लिंग

पेल्लिंग एक शांत कस्बा है, जो करीब 7,050 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग सरीखा है। हरी-भरी घाटियों, झर-झर गिरते झरनों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ यह इलाका सिक्किम के मूल स्वरूप को बेहद खूबसूरती से समेटे हुए है। यहां अकसर कोहरा और बादल छाए रहते हैं, जो इसकी अलौकिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। यहां ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग, बर्ड वॉचिंग करने के अलावा, प्राचीन मठ, गोंपा और स्तूपों से लेकर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान एवं पवित्र खेचेओपालरी झील की सैर कर सकते हैं। हमने कुछ चुनिंदा स्थानों पर जाना तय किया।

पेमायंगत्से मठः 17वीं सदी में स्थापित, सिक्किम के सबसे पुराने मठों में से एक पेमायंगत्से मठ में दुर्लभ कलाकृतियां देखने को मिलेंगे।

खेचेओपालरी झीलः बौद्ध और हिंदू धर्म में पूज्यनीय माने जाने वाले पवित्र खेचेओपालरी झील में एक अलग ही अनुभव होता है। मान्यता है कि मनोकामना पूर्ति करने वाली इस झील के शांत जल को गुरु पद्मसिन और देवी तारा का आशीर्वाद प्राप्त है।

सिडकियोंग बर्ड पार्कः पक्षी प्रेमियों के लिए पेल्लिंग और रबदंत्से के बीच एक खास आकर्षण का स्थल है- सिडकियोंग बर्ड पार्क, जो हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले देशी-विदेशी पक्षियों का घर है।

रिवर ऑरेंज गार्डनः रिंबी नदी के किनारे स्थित इस गार्डन में संतरे के बेशुमार पेड़ लगे हैं। ऑरेंज गार्डन के अंदर एक विलेज होमस्टे, कुछ दुकानें और रेस्टोरेंट भी हैं।

ग्लास स्काईवॉकः ग्लास स्काईवॉक पेल्लिंग के बेहद शानदार अनुभवों में से एक है। देश के इस पहले 'ग्लास स्काईवॉक' के अनुभव को भुलाया नहीं जा सकता, जो समुद्रतल से लगभग 7200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। जब आप इसके पारदर्शी शीशे के फर्श पर कदम रखते हैं, तो हवा में चलने जैसा एहसास होता है। नीचे घाटी को देखते हुए रोमांचक अनुभव होने के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी होती है। लेकिन आस-पास के हरे-भरे नजारे और पूर्वी हिमालय के शानदार दृश्य मन को सुकून देते हैं। स्काईवॉक के समीप ही चार भुजाओं वाले चेनरेजिंग (अवलोकितेश्वर) की 137 फीट ऊंची मूर्ति भी स्थित है।

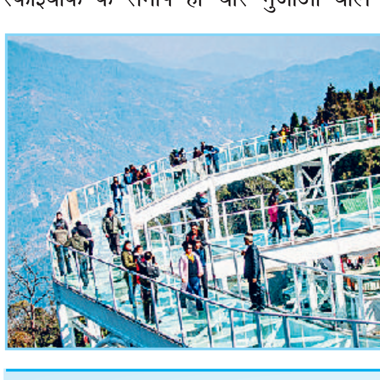

नामची में चार धाम के दिव्य दर्शन

पेल्लिंग में दो दिन बिताने के उपरांत हमारा अगला डेस्टिनेशन था, सिक्किम के दक्षिण में स्थित नामची। इसे राज्य का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र कहते हैं। यहां हमने 'चार धाम' मंदिर के दर्शन किए। असल में यहां भारत के चार पवित्र मंदिरों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। मंदिर परिसर में भगवान शिव की 108 फुट ऊंची प्रतिमा मुख्य आकर्षण का केंद्र है। समीप में एक भव्य साईं मंदिर भी है।

रावंगला का अलौकिक बुद्ध पार्क

नामची से जब हम रावंगला की ओर बढ़े, तो वहां हमें एक भव्य बुद्ध पार्क के दर्शन हुए, जिसे 'तथागत त्सल' के नाम से भी जाना जाता है। यहां शाक्यमुनि बुद्ध की 130 फुट ऊंची, अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थित है।

मनमोहक त्सोंगो झील

गंगटोक से लगभग 40 किलोमीटर दूर (गंगटोक-नाथुला हाइवे), 12,313 फीट की ऊंचाई पर स्थित त्सोंगो झील एक हिमनद झील है, जो अपने शानदार प्राकृतिक नजारों और गहरे सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है। इसकी सतह का रंग मौसम के अनुसार, बदलता रहता है। जैसे ही हम इसके करीब पहुंचे, वहां का नजारा कल्पना से भी परे था। चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां और हरे-भरे घास के मैदान। यह किसी परी कथा से सीधे निकला हुआ दृश्य लग रहा था। हमने यहां न सिर्फ बर्फ में मस्ती, याक की सवारी की, बल्कि दुनिया के सबसे ऊंचे रोप-वे की रोमांचक यात्रा भी की।

लाचुंग की यादगार यात्रा

हमारा अगला पड़ाव अब सिक्किम का उत्तरी भाग था, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा और अधिक रिमोट क्षेत्र है। गंगटोक से लाचुंग की दूरी करीब 102 किमी. है। सबसे पहले हमें मिला, सेवन सिस्टर्स वॉटरफॉल्स। इस झरने में सात सीढ़ियां या चरण हैं, इसलिए इसका यह नाम पड़ा। यहां कुछ देर ठहरने के पश्चात हम आगे बढ़े, तो अगला पड़ाव लाचुंग में प्रवेश का चेक प्वाइंट था। लाचुंग में हमने रात में होटल में विश्राम किया और अगले दिन सुबह-सुबह युमथांग घाटी और जीरो प्वाइंट के लिए निकले।

परीलोक जैसा युमथांग घाटी

11,800 फीट से ज्यादा की ऊंचाई पर बसा युमथांग घाटी किसी परीलोक जैसा लगा। अल्पाइन घास के सुंदर मैदान, चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां, गर्म पानी के झरने और साथ में बहती लाचुंग नदी। इसे फूलों की घाटी भी कहते हैं। यहां खासकर रोडोडेंड्रोन के फूल खिलते हैं, जो वैली को गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों से रंग देते हैं।

धरती का वंडरलैंड जोरो प्वाइंट

युमथांग घाटी के सर्पीले रास्तों से गुजरते हुए हमारा साक्षात्कार धरती पर एक अलग ही दुनिया से होता है, जिसे 'जीरो प्वाइंट' (या युमेसमडोंग) कहते हैं। उत्तरी सिक्किम में 15,300 फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन सीमा के पास स्थित यह एक सफेद वंडरलैंड है। यहां ऑक्सीजन की मात्रा कम होती है, तो आपको नीचे से ही पोर्टेबल ऑक्सीजन कैन लेकर आना होता है। जीरो प्वाइंट पर सिर्फ भारतीय सैलानी ही आ सकते हैं। उन्हें सिक्किम टूरिज्म डिपार्टमेंट से प्रोटेक्टेड एरिया परमिट की जरूरत पड़ती है, जो रजिस्टर्ड टूर ऑपरेटर के जरिए एडवांस में लेना होता है। *

कब जाएं : सिक्किम जाने का बेस्ट टाइम है मार्च से मई का महीना। इसके अलावा अक्टूबर से दिसंबर के मध्य तक यहां जा सकते हैं। यूं कहें कि मानसून से पहले यहां कभी भी जा सकते हैं।

कैसे जाएं : आमतौर पर सैलानी पश्चिम बंगाल के बागडोगरा तक हवाई यात्रा करते हैं और वहां से कैब के जरिए गंगटोक जाते हैं। आगे की यात्रा भी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त टूर ऑपरेटर के कैब या टैक्सी से करते हैं। बागडोगरा के अलावा, गंगटोक से 35 किमी दूर स्पेशल पाकयोंग एयरपोर्ट भी है। ट्रेन से आप सिलिगुड़ी या न्यू जलपाईगुड़ी तक पहुंच सकते हैं और वहां से कैब से गंगटोक जा सकते हैं।

परफ्यूम-डिओड्रेंट से मिले फ्रेश फील

सीजनल ट्रेंड / विवेक कुमार

गर्मी के मौसम में युवाओं की लाइफस्टाइल में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। उनके ड्रेस कलर हल्के हो जाते हैं। फुटवियर कंफर्टेबल और पसीना सोखने वाले पहनने लगते हैं। स्किन केयर प्रोडक्ट्स की संख्या बढ़ जाती है और इन सब चीजों के साथ ही शामिल हो जाता है डिओड्रेंट और परफ्यूम।

बढ़ा है ट्रेंडः एक जमाना था, जब केवल खास मौकों पर ही परफ्यूम, डिओड्रेंट आदि का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन आज के युवाओं की डेली लाइफस्टाइल के लिए ये जरूरी चीजें बन गई हैं, क्योंकि अब खुशबू केवल सौंदर्य का विषय नहीं बल्कि आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का भी हिस्सा है। इसलिए कॉलेज से लेकर सोशल गेदरिंग और दफ्तर तक में परफ्यूम, डिओड्रेंट का चलन बहुत बढ़ गया है।

गर्मियों में इसलिए भी है जरूरीः गर्मियों में शरीर से पसीना बहुत निकलता है। इस कारण शरीर में बैक्टीरिया तेजी से सक्रिय होते हैं और शरीर से दुर्गंध आने लगती है। यंगस्टर्स सबसे ज्यादा भागदौड़ करते हैं और बहुत सारे लोगों से मिलते-जुलते हैं। ऐसे में शरीर से अच्छी खुशबू आना और फ्रेश फील करना, जरूरी हो जाता है। यही वजह है कि गर्मी के मौसम में डिओड्रेंट और परफ्यूम युवाओं के लिए सबसे जरूरी एसेसरीज बन जाती हैं।

बदल रही है च्वॉइसः फ्रेगरेंस की बात करें तो पहले के जमाने में लोग सिट्रस, एक्वा, मिंट, फ्लोरल नोट्स वाले परफ्यूम इस्तेमाल किया करते थे। जबकि लड़कियां बॉडी मिस्ट और हल्के फ्रूटी परफ्यूम पसंद करती थीं। लेकिन आजकल स्पोर्टी और मस्क फ्रेगरेंस का चलन बढ़ा है।

बढ़ी है डिमांड-सप्लाईः कुछ दशक पहले के युवाओं के मुकाबले आज के युवाओं की अर्निंग और परचेजिंग पावर बढ़ी है। जो टीनएजर अपने मम्मी-पापा पर पॉकेटमनी के लिए डिपेंड हैं, उनकी पॉकेटमनी भी पहले से काफी ज्यादा बढ़ गई है। इस कारण भी बाजार में परफ्यूम और डिओड्रेंट जैसी एसेसरीज की भरमार हो गई है। अब केवल बड़े ब्रांड ही नहीं बल्कि कई भारतीय स्टार्टअप भी युवाओं को ध्यान में रखकर नए-नए प्रोडक्ट्स लांच कर रहे हैं। मसलन, पॉकेट परफ्यूम, मिनी रोल-ऑन, एल्कोहल फ्री डिओड्रेंट आदि तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। *

रोचक
शिखर चंद जैन

इन दिनों फ्रूट मार्केट में तरह-तरह के आम खूब मिल रहे हैं। इनका स्वाद तो लाजवाब होता ही है, इनसे जुड़े अतीत के कुछ किस्से भी बड़े दिलचस्प हैं।

आम से जुड़े ये किस्से हैं बेहद खास

भारत में आम केवल एक फल नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य इतिहास और राजनीति का एक अहम हिस्सा रहा है। सम्राटों से लेकर राजनेताओं और साहित्यकारों तक, आम की मिठास ने कई किस्सों को जन्म दिया है। हिंदी साहित्य में 'आम' न केवल फलों का राजा होने के कारण प्रसिद्ध है, बल्कि यह वसंत ऋतु, प्रेम, मादकता और कामदेव के प्रतीकों के रूप में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी कविता और निबंधों तक, आम का बौर, उसकी खुशबू और मिठास कवियों और लेखकों की कल्पना का अभिन्न हिस्सा रही है। आम से जुड़े कुछ रोचक किस्से हैं, जो आज भी रस ले-लेकर सुने-सुनाए जाते हैं।

आम्रपाली और आम्रपाली आम का रिश्ताः बिहार की प्रसिद्ध नृत्यांगना और वैशाली की गणिका आम्रपाली, आम के पेड़ के नीचे शिशु रूप में मिली थी, इसलिए उसका नाम 'आम्रपाली' (आम के पत्ते) रखा गया। आम की एक लोकप्रिय किस्म 'आम्रपाली' का नामकरण उसी के नाम पर किया गया है।

बुद्ध और आम का उपवनः कहा जाता है कि आम्रपाली ने भगवान बुद्ध को अपने आम के बाग (आम्रवन) में आमंत्रित किया था और उन्हें वह बाग दान कर दिया था। आम्रपाली बाद में महात्मा बुद्ध की शिष्या बन गईं।

अमीर खुसरो का आम पर शेरः 13वीं सदी के महान कवि अमीर खुसरो ने फारसी में आम की प्रशंसा में कविताएं लिखी थीं। खुसरो ने आम को 'नगजा तरीन मेवाह हिंद' (भारत का सबसे खूबसूरत फल) कहा था।

अलाउद्दीन खिलजी की शाही दावत में आमः दिल्ली के सुल्तान रहे अलाउद्दीन खिलजी आम के दीवाने थे। कहा जाता है कि उन्होंने दिल्ली के 'कुश-ए-फिरोजी' में आम की कई किस्मों की एक शानदार दावत दी थी, जिसमें उन्होंने आम के साथ संगीत का शानदार कार्यक्रम आयोजित करवाया था।

आम का दीवाना बाबरः मुगल वंश के संस्थापक बाबर को आम इतना पसंद था कि उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में आम का जिक्र किया है। कहा जाता है कि वह भारत में आम का स्वाद चखकर चकित रह गया था, क्योंकि यह फल मध्य एशिया के देशों में नहीं मिलता था।

अकबर का आम प्रेम और लाख बागः मुगल बादशाह अकबर आम का इतना शौकीन था कि उसने बिहार के दरभंगा में 1 लाख से अधिक आम के पेड़ों का बाग लगवाया था, जिसे 'लाखी बाग' कहा जाता था। उसने आम की कई उन्नत किस्मों को भी विकसित करने में सहायता दी थी।

मिर्जा गालिब की आम-दीवानगीः मशहूर शायर मिर्जा गालिब आम के बड़े दीवाने थे। वे कहते थे कि 'आम में बस दो ही खूबियां होनी चाहिए-वे मीठे हों और बहुत सारे हों।' एक किस्से के अनुसार, जब उनके दोस्त ने आम को नापसंद किया, तो गालिब ने नाराज होकर कहा था, 'गधे भी आम नहीं खाते।' *

भारत में हुई आम की उत्पत्तिः माना जाता है कि आम की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत में हुई, जहां 4000 वर्ष ईसा पूर्व हिंदू ग्रंथों में इस फल का उल्लेख मिलता है। बौद्ध भिक्षु भी इस फल की खेती करते थे। प्राचीन काल में बौद्ध भिक्षुओं और बाद में व्यापारियों तथा विदेशी यात्रियों के माध्यम से आम दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और अंततः दक्षिण अमेरिका तक पहुंचा।

सिने ट्रेंड
डी. जे. नंदन

फिल्मों में कितना इफेक्टिव है स्पीड-एडवेंचर का जादू

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी जी रहे लोग, खासकर यंगस्टर्स, मनोरंजन के लिए देखी जाने वाली फिल्मों में भी 'स्पीड' यानी तेजी से भागती कहानी पसंद करते हैं। हालांकि कई फिल्में इसकी अपवाद भी रही हैं। फिल्मों में स्पीड और एडवेंचर के सक्सेस से रिलेशन पर एक नजर।

'आज का दर्शक ठहराव नहीं, स्पीड चाहता है।' यह धारणा इन दिनों फिल्म जगत में किसी सूत्रवाक्य की तरह हर तरफ गूंज रही है। कहा जा रहा है कि मोबाइल स्क्रीन, रील कल्चर और लगातार बदलती डिजिटल दुनिया ने युवाओं को इतना धैर्यहीन बना दिया है कि अब वह उन्हीं फिल्मों को देख सकते हैं या देखते हैं, जो शुरुआती 10 मिनटों में ही दर्शकों को खुद से जोड़ ले। हर कुछ देर में चौकाएं और कहानी में बिना कोई ठहराव आए, वह लगातार आगे बढ़ती रहे। इसके लिए फिल्मों में तेज एडिटिंग, छोटे दृश्य, लगातार ट्विस्ट और ऊंची भावनात्मक उत्तेजना का चलन बढ़ा है। कुल मिलाकर यह 'हाई इंगेजिंग' ड्रामा का दौर है।

दर्शकों को चाहिए अटैचमेंट हुकः इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज का युवा दर्शक शुरू से ही फिल्मों में 'अटैचमेंट हुक' चाहता है। उसमें यह आदत हाल के सालों में विकसित हुई रील कल्चर और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ही लगाई है, क्योंकि आज के युवा आमतौर पर दिन के तीन से चार घंटे, छोटे वीडियो और तेज रफ्तार सूचनाओं के घेरे में रहते हैं। लगातार बदलती विजुअल एक्साइटमेंट के बीच रहने के कारण उनके स्वभाव में तेजी को लेकर पसंदगी बढ़ी है। बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में भी कुछ इस तरह से हाइप बन गई है कि अगर कहानी देर तक एक ही वातावरण में टिकी रही तो दर्शकों, विशेषकर युवाओं का ध्यान उचट जाएगा और वो फिल्म को नकारा देंगे।

इन फिल्मों ने सेट किया नया ट्रेंडः अब बॉलीवुड ट्रेंड के जानकारों और फिल्म मेकर्स के लिए सफलता का अलिखित सिद्धांत बन चुका है कि युवा दर्शकों को फिल्मों में शुरू से ही बांधकर रखो। किसी बड़े हादसे के जरिए, किसी उलझाऊ रहस्य के जरिए या अंधाधुंध हिंसा अथवा विस्फोट के जरिए। बहरहाल, यह राय बनाने या यूं कहें कि यह ट्रेंड सेट करने में हाल के वर्षों में आई 'जवान' और 'एनिमल' जैसी फिल्मों की बड़ी भूमिका है। क्योंकि इन फिल्मों में तेज रफ्तारी का सिद्धांत ही सबसे ज्यादा मजबूती से खड़ा दिखाई देता है। इन फिल्मों की सफलता और फिर हाल में आई 'धुरंधर-1', 'धुरंधर-2', की सफलता ने ही तेज रफ्तार वाली फिल्मों के लिए माहौल बनाया है। ट्विस्ट और टर्न्स से भरी इन इन सभी फिल्मों में बड़ी तेजी से थोड़ी-थोड़ी देर में दृश्य बदलते हैं।

इमोशनल इंगेजिंग फिल्में भी हुईं सफलः फिल्मों की स्पीड को लेकर सवाल यह भी उठता है कि क्या सचमुच आज का युवा दर्शक सिर्फ तेज रफ्तार फिल्मों का दीवाना है? अगर ऐसा ही होता तो भला '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी धीमी रफ्तार वाली फिल्मों को युवाओं ने इतना क्यों पसंद किया? दरअसल, बहस सिर्फ स्पीड की नहीं इंगेजमेंट की है। आज का युवा दर्शक वाकई कहानी में अनावश्यक खिंचाव नहीं चाहता, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह भावनात्मक गहराई को समझता नहीं या उसे पसंद नहीं करता। जब भी ऐसी फिल्में आती हैं, जिनमें भावनात्मक गहराई मौजूद होती है, तो फिर वह उन्हें निश्चित रूप से पसंद करता है। '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी फिल्मों का कथानक भी महानगरों से दूर ग्रामीण परिवेश का था, फिर भी ये दोनों फिल्में खासकर युवा दर्शकों द्वारा खूब पसंद की गईं, तो इसका मतलब यह है कि युवा दर्शक सिर्फ तेज स्पीड और हाई इंगेजिंग फिल्मों को ही पसंद नहीं करते बल्कि उन सभी फिल्मों को पसंद करता है, जो उनकी भावनाओं को स्पर्श करती हैं। आज के युवा दर्शक अच्छी कहानी पसंद करते हैं, चाहे वह तेज हो या फिर चाहे धीमी ही क्यों न हो।

पुरानी फिल्मों में नहीं था स्पीड का प्रेशरः पुराने जमाने की फिल्मों के पात्र आपस में देर तक बातचीत करते थे। खामोशी होती थी, तो वह भी कई बार इतनी लंबी होती थी कि दर्शक खुद खामोशी महसूस करने लगता था। इस तरह अगर इस स्पीड के पैमाने पर पुरानी फिल्मों को कसें तो कोई फिल्म ही नहीं हिट होनी चाहिए थी। लेकिन हम जानते हैं कि फिल्मों की सफलता की दर आज के मुकाबले पहले कहीं ज्यादा थी। यह अलग बात है कि आज के मुकाबले फिल्मों की कमाई बहुत कम थी। वास्तव में पेस (स्पीड) इन दिनों सच्चाई से कहीं ज्यादा एक फैशन की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, जबकि सच यह है कि आज के दर्शक भी गहरे और इंटेंस कम रफ्तार के दृश्य भी खूब पसंद करते हैं।

स्पीड के अलावा भी हैं कई फैक्टर्सः आज का युवा दर्शक सिर्फ धीमेपन से बोर नहीं होता बल्कि बेसिर पैर के फिल्म के खिंचाव, बिना किसी वजह फिल्म को वल्गर बनाने की कोशिश और जबर्दस्ती फिल्मों में ठूंस दिए गए आइटम सॉन्ग जैसे एक्सपेरिमेंट्स से चिढ़ता है। उसे ऐसी फिल्में वाकई ज्यादा पसंद नहीं आतीं, जिनमें जानबूझकर लॉजिक की ऐसी-तैसी की गई हो। आज का दर्शक फिल्म के हर फ्रेम में चाहे वह जिस तरह की भावना का हो, इसमें हाई इंटेंसिटी की तलाश करता है। कुल मिलाकर कहने का मतलब यह है कि सवाल रफ्तार का नहीं, निरंतरता का है। अगर फिल्में दर्शक को लगातार मानसिक और भावनात्मक तरीके से जोड़े रखती हैं, तो वह धीमी होकर भी प्रभावशाली हो सकती हैं, यह कोई ब्रह्म वाक्य नहीं है कि आज का दर्शक स्पीड और हाई इंगेजिंग ट्विस्ट वाली फिल्में ही देखना चाहते हैं। वे केवल एंटरटेनमेंट चाहते हैं। *